



# Shubham

14 Sep 1994

02:52 PM

Ellenabad

Model: Web-KundliPhal

Order No: 120926401

## सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग \_\_\_\_\_: पुल्लिंग  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_: 14/09/1994  
दिन \_\_\_\_\_: बुधवार  
जन्म समय \_\_\_\_\_: 14:52:00 घंटे  
इष्ट \_\_\_\_\_: 21:31:41 घटी  
स्थान \_\_\_\_\_: Ellenabad  
राज्य \_\_\_\_\_: Haryana  
देश \_\_\_\_\_: India

अक्षांश \_\_\_\_\_: 29:25:00 उत्तर  
रेखांश \_\_\_\_\_: 74:40:00 पूर्व  
मध्य रेखांश \_\_\_\_\_: 82:30:00 पूर्व  
स्थानिक संस्कार \_\_\_\_\_: -00:31:20 घंटे  
ग्रीष्म संस्कार \_\_\_\_\_: 00:00:00 घंटे  
स्थानिक समय \_\_\_\_\_: 14:20:40 घंटे  
वेलान्तर \_\_\_\_\_: 00:04:17 घंटे  
साम्पातिक काल \_\_\_\_\_: 13:53:10 घंटे  
सूर्योदय \_\_\_\_\_: 06:15:19 घंटे  
सूर्यास्त \_\_\_\_\_: 18:38:13 घंटे  
दिनमान \_\_\_\_\_: 12:22:54 घंटे  
सूर्य स्थिति(अयन) \_\_\_\_\_: दक्षिणायन  
सूर्य स्थिति(गोल) \_\_\_\_\_: उत्तर  
ऋतु \_\_\_\_\_: शरद  
सूर्य के अंश \_\_\_\_\_: 27:33:10 सिंह  
लग्न के अंश \_\_\_\_\_: 19:39:56 धनु

#### अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति \_\_\_\_\_: धनु - गुरु  
राशि-स्वामी \_\_\_\_\_: धनु - गुरु  
नक्षत्र-चरण \_\_\_\_\_: पूर्वाषाढा - 3  
नक्षत्र स्वामी \_\_\_\_\_: शुक्र  
योग \_\_\_\_\_: सौभाग्य  
करण \_\_\_\_\_: गर  
गण \_\_\_\_\_: मनुष्य  
योनि \_\_\_\_\_: वानर  
नाड़ी \_\_\_\_\_: मध्य  
वर्ण \_\_\_\_\_: क्षत्रिय  
वश्य \_\_\_\_\_: मानव  
वर्ग \_\_\_\_\_: मूषक  
युँजा \_\_\_\_\_: अन्त्य  
हंसक \_\_\_\_\_: अग्नि  
जन्म नामाक्षर \_\_\_\_\_: फा-फारुख  
पाया(राशि-नक्षत्र) \_\_\_\_\_: स्वर्ण - ताम्र  
सूर्य राशि(पाश्चात्य) \_\_\_\_\_: कन्या

## पंचांग

दादा का नाम \_\_\_\_\_ :  
पिता का नाम \_\_\_\_\_ :  
माता का नाम \_\_\_\_\_ :  
जाति \_\_\_\_\_ :  
गोत्र \_\_\_\_\_ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1916	भाद्रपद	23
पंजाबी	संवत : 2051	भाद्रपद	30
बंगाली	सन् : 1401	भाद्रपद	28
तमिल	संवत : 2051	आवनी	29
केरल	कोल्लम : 1170	चिंगम	29
नेपाली	संवत : 2051	भाद्रपद	29
चैत्रादि	संवत : 2051	भाद्रपद	शुक्ल 10
कार्तिकादि	संवत : 2051	भाद्रपद	शुक्ल 10

### पंचांग

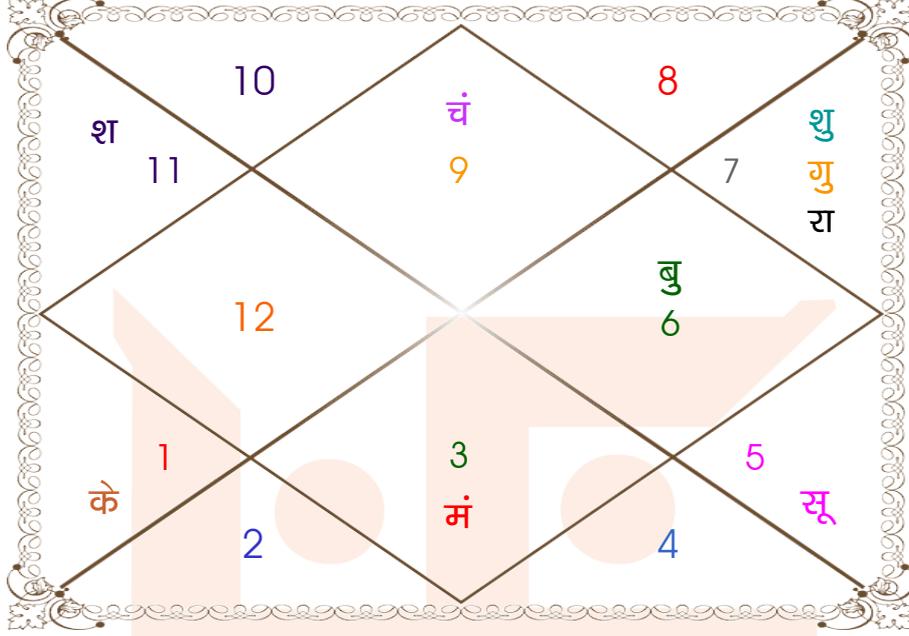
सूर्योदय कालीन तिथि \_\_\_\_\_ : 10  
तिथि समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 25:30:09  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_ : 10  
सूर्योदय कालीन नक्षत्र \_\_\_\_\_ : पूर्वाषाढ़ा  
नक्षत्र समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 23:09:39 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : पूर्वाषाढ़ा  
सूर्योदय कालीन योग \_\_\_\_\_ : सौभाग्य  
योग समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 21:08:13 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : सौभाग्य  
सूर्योदय कालीन करण \_\_\_\_\_ : तैतिल  
करण समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 14:02:43 घंटे  
जन्म करण \_\_\_\_\_ : गर  
भयात \_\_\_\_\_ : 38:02:04  
भभोग \_\_\_\_\_ : 58:46:10  
भोग्य दशा काल \_\_\_\_\_ : शुक्र 7 वर्ष 0 मा 8 दि

### घात चक्र

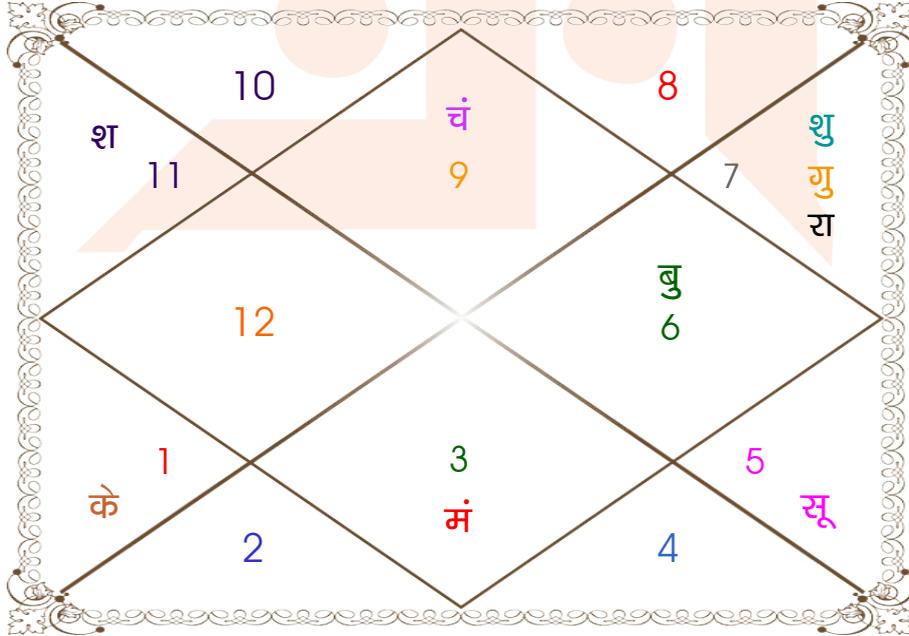
मास \_\_\_\_\_ : श्रावण  
तिथि \_\_\_\_\_ : 3-8-13  
दिन \_\_\_\_\_ : शुक्रवार  
नक्षत्र \_\_\_\_\_ : भरणी  
योग \_\_\_\_\_ : वज्र  
करण \_\_\_\_\_ : तैतिल  
प्रहर \_\_\_\_\_ : 1  
वर्ग \_\_\_\_\_ : मार्जार  
लग्न \_\_\_\_\_ : धनु  
सूर्य \_\_\_\_\_ : तुला  
चन्द्र \_\_\_\_\_ : मीन  
मंगल \_\_\_\_\_ : वृश्चिक  
बुध \_\_\_\_\_ : सिंह  
गुरु \_\_\_\_\_ : धनु  
शुक्र \_\_\_\_\_ : कुम्भ  
शनि \_\_\_\_\_ : कन्या  
राहु \_\_\_\_\_ : कुम्भ

# जन्म कुण्डली

## लग्न कुण्डली



## चन्द्र कुण्डली



## लग्न कुण्डली और दशा

### लग्न कुण्डली

	के		मं
श			
			सू
चं ल		रा गु शु	बु

### लग्न कुण्डली

	के	
मं		श
सू	शु गु रा	ल चं

विंशोत्तरी  
शुक्र 7वर्ष 0मा 8दि  
शुक्र

14/09/1994

23/09/2101

शुक्र	22/09/2001
सूर्य	23/09/2007
चन्द्र	22/09/2017
मंगल	22/09/2024
राहु	23/09/2042
गुरु	23/09/2058
शनि	22/09/2077
बुध	23/09/2094
केतु	23/09/2101

योगिनी

सिद्धा 2वर्ष 5मा 15दि

उल्का

29/02/2020

28/02/2026

उल्का	28/02/2021
सिद्धा	30/04/2022
संकटा	30/08/2023
मंगला	30/10/2023
पिंगला	29/02/2024
धान्या	29/08/2024
भ्रामरी	30/04/2025
भद्रिका	28/02/2026

Astro Numerologer "Om Namah Shivay"

Dharuhera, Rewari (HARYANA)

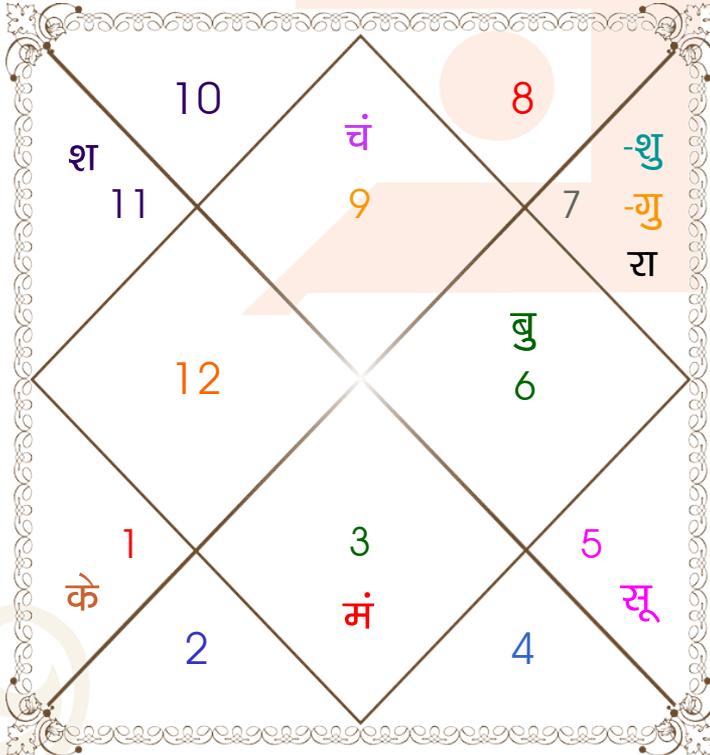
## ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			धनु	19:39:56	357:38:58	पूर्वाषाढा	2	20	गुरु	शुक्र	राहु	---
सूर्य			सिंह	27:33:10	00:58:26	उ०फाल्गुनी	1	12	सूर्य	सूर्य	चंद्र	स्वराशि
चंद्र			धनु	21:59:04	13:35:01	पूर्वाषाढा	3	20	गुरु	शुक्र	शनि	सम राशि
मंगल			मिथु	24:17:59	00:36:29	पुनर्वसु	2	7	बुध	गुरु	बुध	शत्रु राशि
बुध			कन्या	21:03:21	01:20:53	हस्त	4	13	बुध	चंद्र	शुक्र	स्वराशि
गुरु			तुला	18:12:30	00:10:27	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	चंद्र	शत्रु राशि
शुक्र			तुला	11:32:45	00:45:15	स्वाति	2	15	शुक्र	राहु	शनि	मूलत्रिकोण
शनि	व		कुंभ	14:16:09	00:04:23	शतभिषा	3	24	शनि	राहु	बुध	मूलत्रिकोण
राहु	व		तुला	22:41:30	00:03:40	विशाखा	1	16	शुक्र	गुरु	शनि	मित्र राशि
केतु	व		मेष	22:41:30	00:03:40	भरणी	3	2	मंगल	शुक्र	शनि	मित्र राशि
हर्ष	व		धनु	28:43:49	00:00:52	उत्तराषाढा	1	21	गुरु	सूर्य	मंगल	---
नेप	व		धनु	26:52:40	00:00:35	उत्तराषाढा	1	21	गुरु	सूर्य	सूर्य	---
प्लूटो			वृश्चि	01:55:44	00:01:18	विशाखा	4	16	मंगल	गुरु	राहु	---
दशम भाव			तुला	06:37:10	--	चित्रा	--	14	शुक्र	मंगल	चंद्र	--

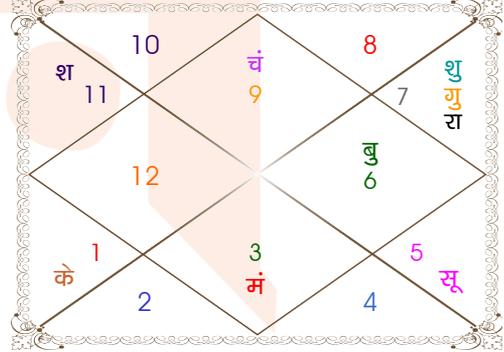
व - वकी स - स्थिर  
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त  
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:47:12

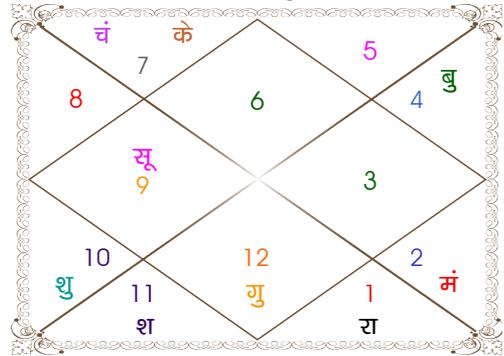
### लग्न-चलित



### चन्द्र कुंडली



### नवमांश कुंडली



## चलित तथा निरयण भाव चलित

### चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	धनु 07:29:28	धनु 19:39:56
2	मकर 07:29:28	मकर 25:19:00
3	कुम्भ 13:08:33	मीन 00:58:05
4	मीन 18:47:37	मेष 06:37:10
5	मेष 18:47:37	वृष 00:58:05
6	वृष 13:08:33	वृष 25:19:00
7	मिथुन 07:29:28	मिथुन 19:39:56
8	कर्क 07:29:28	कर्क 25:19:00
9	सिंह 13:08:33	कन्या 00:58:05
10	कन्या 18:47:37	तुला 06:37:10
11	तुला 18:47:37	वृश्चिक 00:58:05
12	वृश्चिक 13:08:33	वृश्चिक 25:19:00

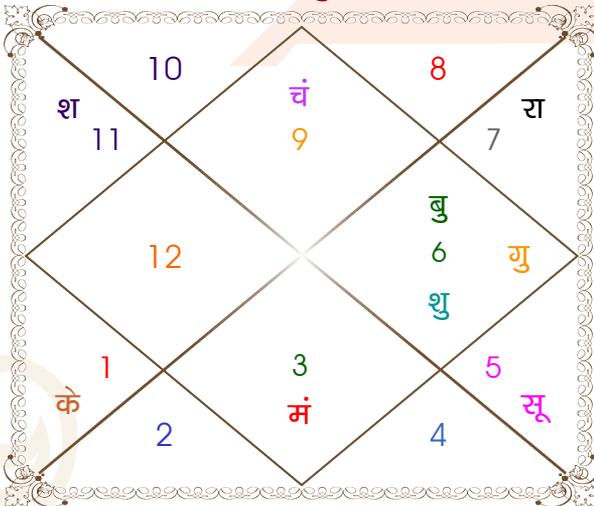
### निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	धनु	19:39:56
2	मकर	26:24:46
3	मीन	04:11:36
4	मेष	06:37:10
5	वृष	02:59:03
6	वृष	26:08:13
7	मिथुन	19:39:56
8	कर्क	26:24:46
9	कन्या	04:11:36
10	तुला	06:37:10
11	वृश्चिक	02:59:03
12	वृश्चिक	26:08:13

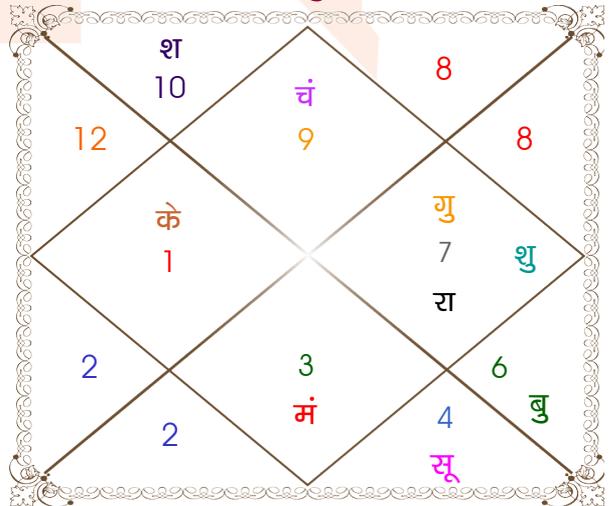
### तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा
पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल

### चलित कुंडली



### भाव कुंडली



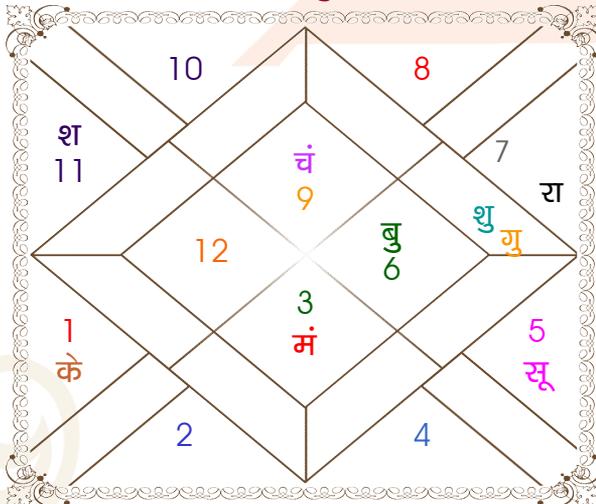
## कारक, अवस्था, रश्मि

ग्रह	कारक		अवस्था				ग्रह बल
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	
सूर्य	आत्मा	पितृ	मृत	स्वस्थ	उपवेशन	3.54	32 %
चंद्र	भातृ	मातृ	वृद्ध	निपीदित	आगमन	2.94	77 %
मंगल	अमात्य	भातृ	मृत	खल	उपवेशन	0.94	52 %
बुध	मातृ	ज्ञाति	कुमार	स्वस्थ	आगमन	7.25	83 %
गुरु	पुत्र	धन	वृद्ध	खल	आगम	1.19	19 %
शुक्र	कलत्र	कलत्र	कुमार	स्वस्थ	उपवेशन	1.29	37 %
शनि	ज्ञाति	आयु	युवा	स्वस्थ	उपवेशन	3.65	70 %
राहु	---	ज्ञान	वृद्ध	मुदित	नृत्यलिप्सा	0.00	67 %
केतु	---	मोक्ष	वृद्ध	मुदित	आगम	0.00	67 %
कुल						20.80	

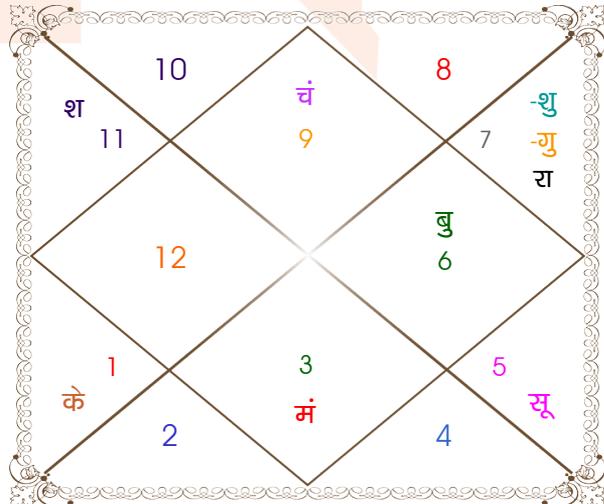
### तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा
पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल

### चलित कुंडली



### लग्न-चलित



## विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 7 वर्ष 0 मास 8 दिन

शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष
14/09/1994	22/09/2001	23/09/2007	22/09/2017	22/09/2024
22/09/2001	23/09/2007	22/09/2017	22/09/2024	23/09/2042
00/00/0000	सूर्य 10/01/2002	चंद्र 23/07/2008	मंगल 19/02/2018	राहु 05/06/2027
00/00/0000	चंद्र 12/07/2002	मंगल 21/02/2009	राहु 09/03/2019	गुरु 29/10/2029
00/00/0000	मंगल 16/11/2002	राहु 23/08/2010	गुरु 13/02/2020	शनि 04/09/2032
00/00/0000	राहु 11/10/2003	गुरु 23/12/2011	शनि 24/03/2021	बुध 24/03/2035
00/00/0000	गुरु 29/07/2004	शनि 24/07/2013	बुध 21/03/2022	केतु 11/04/2036
14/09/1994	शनि 11/07/2005	बुध 23/12/2014	केतु 17/08/2022	शुक्र 12/04/2039
शनि 22/09/1997	बुध 18/05/2006	केतु 24/07/2015	शुक्र 17/10/2023	सूर्य 05/03/2040
बुध 23/07/2000	केतु 23/09/2006	शुक्र 24/03/2017	सूर्य 22/02/2024	चंद्र 04/09/2041
केतु 22/09/2001	शुक्र 23/09/2007	सूर्य 22/09/2017	चंद्र 22/09/2024	मंगल 23/09/2042

गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष
23/09/2042	23/09/2058	22/09/2077	23/09/2094	23/09/2101
23/09/2058	22/09/2077	23/09/2094	23/09/2101	00/00/0000
गुरु 10/11/2044	शनि 25/09/2061	बुध 19/02/2080	केतु 19/02/2095	शुक्र 23/01/2105
शनि 24/05/2047	बुध 05/06/2064	केतु 15/02/2081	शुक्र 20/04/2096	सूर्य 23/01/2106
बुध 29/08/2049	केतु 14/07/2065	शुक्र 17/12/2083	सूर्य 26/08/2096	चंद्र 24/09/2107
केतु 05/08/2050	शुक्र 13/09/2068	सूर्य 23/10/2084	चंद्र 27/03/2097	मंगल 23/11/2108
शुक्र 05/04/2053	सूर्य 26/08/2069	चंद्र 24/03/2086	मंगल 23/08/2097	राहु 24/11/2111
सूर्य 22/01/2054	चंद्र 27/03/2071	मंगल 21/03/2087	राहु 10/09/2098	गुरु 25/07/2114
चंद्र 24/05/2055	मंगल 05/05/2072	राहु 08/10/2089	गुरु 17/08/2099	शनि 15/09/2114
मंगल 29/04/2056	राहु 12/03/2075	गुरु 14/01/2092	शनि 26/09/2100	00/00/0000
राहु 23/09/2058	गुरु 22/09/2077	शनि 23/09/2094	बुध 23/09/2101	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शुक्र 7 वर्ष 0 मा 20 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

<b>राहु - राहु</b> 22/09/2024 05/06/2027	<b>राहु - गुरु</b> 05/06/2027 29/10/2029	<b>राहु - शनि</b> 29/10/2029 04/09/2032	<b>राहु - बुध</b> 04/09/2032 24/03/2035	<b>राहु - केतु</b> 24/03/2035 11/04/2036
राहु 17/02/2025 गुरु 29/06/2025 शनि 02/12/2025 बुध 20/04/2026 केतु 17/06/2026 शुक्र 28/11/2026 सूर्य 17/01/2027 चंद्र 09/04/2027 मंगल 05/06/2027	गुरु 30/09/2027 शनि 16/02/2028 बुध 19/06/2028 केतु 09/08/2028 शुक्र 02/01/2029 सूर्य 15/02/2029 चंद्र 29/04/2029 मंगल 19/06/2029 राहु 29/10/2029	शनि 12/04/2030 बुध 06/09/2030 केतु 06/11/2030 शुक्र 28/04/2031 सूर्य 19/06/2031 चंद्र 14/09/2031 मंगल 14/11/2031 राहु 18/04/2032 गुरु 04/09/2032	बुध 14/01/2033 केतु 09/03/2033 शुक्र 11/08/2033 सूर्य 27/09/2033 चंद्र 14/12/2033 मंगल 06/02/2034 राहु 26/06/2034 गुरु 28/10/2034 शनि 24/03/2035	केतु 16/04/2035 शुक्र 19/06/2035 सूर्य 08/07/2035 चंद्र 09/08/2035 मंगल 31/08/2035 राहु 28/10/2035 गुरु 18/12/2035 शनि 16/02/2036 बुध 11/04/2036
<b>राहु - शुक्र</b> 11/04/2036 12/04/2039	<b>राहु - सूर्य</b> 12/04/2039 05/03/2040	<b>राहु - चंद्र</b> 05/03/2040 04/09/2041	<b>राहु - मंगल</b> 04/09/2041 23/09/2042	<b>गुरु - गुरु</b> 23/09/2042 10/11/2044
शुक्र 10/10/2036 सूर्य 04/12/2036 चंद्र 06/03/2037 मंगल 08/05/2037 राहु 20/10/2037 गुरु 15/03/2038 शनि 04/09/2038 बुध 07/02/2039 केतु 12/04/2039	सूर्य 28/04/2039 चंद्र 25/05/2039 मंगल 14/06/2039 राहु 02/08/2039 गुरु 15/09/2039 शनि 06/11/2039 बुध 22/12/2039 केतु 10/01/2040 शुक्र 05/03/2040	चंद्र 20/04/2040 मंगल 22/05/2040 राहु 12/08/2040 गुरु 24/10/2040 शनि 19/01/2041 बुध 06/04/2041 केतु 08/05/2041 शुक्र 08/08/2041 सूर्य 04/09/2041	मंगल 27/09/2041 राहु 23/11/2041 गुरु 13/01/2042 शनि 15/03/2042 बुध 08/05/2042 केतु 31/05/2042 शुक्र 03/08/2042 सूर्य 22/08/2042 चंद्र 23/09/2042	गुरु 05/01/2043 शनि 08/05/2043 बुध 26/08/2043 केतु 11/10/2043 शुक्र 18/02/2044 सूर्य 28/03/2044 चंद्र 01/06/2044 मंगल 16/07/2044 राहु 10/11/2044
<b>गुरु - शनि</b> 10/11/2044 24/05/2047	<b>गुरु - बुध</b> 24/05/2047 29/08/2049	<b>गुरु - केतु</b> 29/08/2049 05/08/2050	<b>गुरु - शुक्र</b> 05/08/2050 05/04/2053	<b>गुरु - सूर्य</b> 05/04/2053 22/01/2054
शनि 05/04/2045 बुध 14/08/2045 केतु 07/10/2045 शुक्र 11/03/2046 सूर्य 26/04/2046 चंद्र 12/07/2046 मंगल 04/09/2046 राहु 21/01/2047 गुरु 24/05/2047	बुध 18/09/2047 केतु 06/11/2047 शुक्र 23/03/2048 सूर्य 03/05/2048 चंद्र 11/07/2048 मंगल 28/08/2048 राहु 31/12/2048 गुरु 20/04/2049 शनि 29/08/2049	केतु 18/09/2049 शुक्र 14/11/2049 सूर्य 01/12/2049 चंद्र 29/12/2049 मंगल 18/01/2050 राहु 10/03/2050 गुरु 25/04/2050 शनि 18/06/2050 बुध 05/08/2050	शुक्र 14/01/2051 सूर्य 04/03/2051 चंद्र 24/05/2051 मंगल 20/07/2051 राहु 13/12/2051 गुरु 21/04/2052 शनि 22/09/2052 बुध 07/02/2053 केतु 05/04/2053	सूर्य 20/04/2053 चंद्र 14/05/2053 मंगल 31/05/2053 राहु 14/07/2053 गुरु 22/08/2053 शनि 07/10/2053 बुध 17/11/2053 केतु 04/12/2053 शुक्र 22/01/2054

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

<b>गुरु - चंद्र</b>	<b>गुरु - मंगल</b>	<b>गुरु - राहु</b>	<b>शनि - शनि</b>	<b>शनि - बुध</b>
<b>22/01/2054</b>	<b>24/05/2055</b>	<b>29/04/2056</b>	<b>23/09/2058</b>	<b>25/09/2061</b>
<b>24/05/2055</b>	<b>29/04/2056</b>	<b>23/09/2058</b>	<b>25/09/2061</b>	<b>05/06/2064</b>
चंद्र 04/03/2054	मंगल 13/06/2055	राहु 08/09/2056	शनि 16/03/2059	बुध 12/02/2062
मंगल 01/04/2054	राहु 03/08/2055	गुरु 02/01/2057	बुध 18/08/2059	केतु 10/04/2062
राहु 13/06/2054	गुरु 18/09/2055	शनि 21/05/2057	केतु 21/10/2059	शुक्र 21/09/2062
गुरु 17/08/2054	शनि 11/11/2055	बुध 22/09/2057	शुक्र 22/04/2060	सूर्य 09/11/2062
शनि 02/11/2054	बुध 29/12/2055	केतु 13/11/2057	सूर्य 15/06/2060	चंद्र 30/01/2063
बुध 10/01/2055	केतु 18/01/2056	शुक्र 08/04/2058	चंद्र 15/09/2060	मंगल 28/03/2063
केतु 08/02/2055	शुक्र 15/03/2056	सूर्य 21/05/2058	मंगल 18/11/2060	राहु 23/08/2063
शुक्र 30/04/2055	सूर्य 01/04/2056	चंद्र 03/08/2058	राहु 02/05/2061	गुरु 01/01/2064
सूर्य 24/05/2055	चंद्र 29/04/2056	मंगल 23/09/2058	गुरु 25/09/2061	शनि 05/06/2064
<b>शनि - केतु</b>	<b>शनि - शुक्र</b>	<b>शनि - सूर्य</b>	<b>शनि - चंद्र</b>	<b>शनि - मंगल</b>
<b>05/06/2064</b>	<b>14/07/2065</b>	<b>13/09/2068</b>	<b>26/08/2069</b>	<b>27/03/2071</b>
<b>14/07/2065</b>	<b>13/09/2068</b>	<b>26/08/2069</b>	<b>27/03/2071</b>	<b>05/05/2072</b>
केतु 28/06/2064	शुक्र 23/01/2066	सूर्य 30/09/2068	चंद्र 13/10/2069	मंगल 20/04/2071
शुक्र 04/09/2064	सूर्य 22/03/2066	चंद्र 29/10/2068	मंगल 16/11/2069	राहु 20/06/2071
सूर्य 24/09/2064	चंद्र 26/06/2066	मंगल 19/11/2068	राहु 11/02/2070	गुरु 13/08/2071
चंद्र 28/10/2064	मंगल 02/09/2066	राहु 10/01/2069	गुरु 29/04/2070	शनि 16/10/2071
मंगल 20/11/2064	राहु 22/02/2067	गुरु 25/02/2069	शनि 29/07/2070	बुध 12/12/2071
राहु 20/01/2065	गुरु 27/07/2067	शनि 21/04/2069	बुध 19/10/2070	केतु 05/01/2072
गुरु 15/03/2065	शनि 26/01/2068	बुध 09/06/2069	केतु 22/11/2070	शुक्र 12/03/2072
शनि 18/05/2065	बुध 08/07/2068	केतु 29/06/2069	शुक्र 26/02/2071	सूर्य 01/04/2072
बुध 14/07/2065	केतु 13/09/2068	शुक्र 26/08/2069	सूर्य 27/03/2071	चंद्र 05/05/2072
<b>शनि - राहु</b>	<b>शनि - गुरु</b>	<b>बुध - बुध</b>	<b>बुध - केतु</b>	<b>बुध - शुक्र</b>
<b>05/05/2072</b>	<b>12/03/2075</b>	<b>22/09/2077</b>	<b>19/02/2080</b>	<b>15/02/2081</b>
<b>12/03/2075</b>	<b>22/09/2077</b>	<b>19/02/2080</b>	<b>15/02/2081</b>	<b>17/12/2083</b>
राहु 08/10/2072	गुरु 13/07/2075	बुध 25/01/2078	केतु 11/03/2080	शुक्र 07/08/2081
गुरु 24/02/2073	शनि 07/12/2075	केतु 17/03/2078	शुक्र 11/05/2080	सूर्य 27/09/2081
शनि 08/08/2073	बुध 16/04/2076	शुक्र 11/08/2078	सूर्य 29/05/2080	चंद्र 23/12/2081
बुध 02/01/2074	केतु 09/06/2076	सूर्य 24/09/2078	चंद्र 28/06/2080	मंगल 21/02/2082
केतु 04/03/2074	शुक्र 10/11/2076	चंद्र 06/12/2078	मंगल 19/07/2080	राहु 26/07/2082
शुक्र 25/08/2074	सूर्य 27/12/2076	मंगल 27/01/2079	राहु 11/09/2080	गुरु 11/12/2082
सूर्य 16/10/2074	चंद्र 14/03/2077	राहु 07/06/2079	गुरु 30/10/2080	शनि 24/05/2083
चंद्र 10/01/2075	मंगल 07/05/2077	गुरु 03/10/2079	शनि 26/12/2080	बुध 18/10/2083
मंगल 12/03/2075	राहु 22/09/2077	शनि 19/02/2080	बुध 15/02/2081	केतु 17/12/2083

## शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

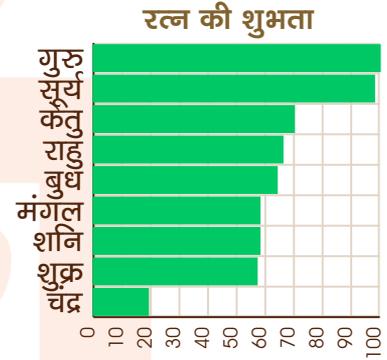
मूलांक	5
भाग्यांक	1
मित्र अंक	3, 5, 9, 1
शत्रु अंक	2, 4, 8
शुभ वर्ष	23,32,41,50,59
शुभ दिन	रवि, गुरु, मंगल
शुभ ग्रह	सूर्य, गुरु, मंगल
मित्र राशि	मीन, सिंह
मित्र लग्न	मीन, सिंह, तुला
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	पुखराज
शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
भाग्य रत्न	माणिक्य
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	पीत
शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
दान अन्न	दाल चना
दान द्रव्य	घी

## रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुखराज	गुरु	100%	धनार्जन, स्वास्थ्य, सुख
माणिक्य	सूर्य	98%	भाग्योदय
लहसुनिया	केतु	70%	सन्तति सुख, दम्पति
गोमेद	राहु	66%	धनार्जन
पन्ना	बुध	64%	व्यावसायिक उन्नति, दम्पति
मूंगा	मंगल	58%	दम्पति, सन्तति सुख, कम खर्च
नीलम	शनि	58%	पराक्रम, धन
हीरा	शुक्र	57%	धनार्जन, शत्रु व रोग मुक्ति
मोती	चंद्र	19%	रोग, दुर्घटना



### दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शुक्र	22/09/2001	86%	0%	58%	70%	100%	69%	64%	72%	77%
सूर्य	23/09/2007	100%	31%	64%	64%	100%	38%	41%	53%	58%
चंद्र	22/09/2017	100%	44%	58%	70%	100%	57%	58%	53%	58%
मंगल	22/09/2024	100%	31%	70%	51%	100%	57%	58%	53%	77%
राहु	23/09/2042	86%	0%	41%	64%	100%	63%	64%	78%	58%
गुरु	23/09/2058	100%	31%	64%	51%	100%	38%	58%	66%	70%
शनि	22/09/2077	86%	0%	41%	70%	100%	63%	71%	72%	58%
बुध	23/09/2094	100%	0%	58%	76%	100%	63%	58%	66%	70%
केतु	23/09/2101	86%	0%	64%	64%	100%	63%	41%	53%	83%

## विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।  
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत् ॥

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते हैं। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते हैं। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ हैं तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते हैं।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते हैं। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

### आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए पुखराज व माणिक्य रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

पुखराज आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

माणिक्य आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए लहसुनिया, गोमेद, पन्ना, मूंगा, नीलम एवं हीरा रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

मोती पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। इस रत्न का आप सर्वदा त्याग ही करें, क्योंकि किसी भी दशा या गोचर में इससे शुभ फल प्राप्त होने की आशा कम ही है। इस रत्न को धारण करने से सामाजिक, आर्थिक व स्वास्थ्य पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

### पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु एकादश भाव में स्थित है। आपको गुरु रत्न पुखराज धारण करना चाहिए। रत्न शुभता से आप कुशाग्र और विचारवान बनेंगे। आप सत्यवक्ता बनेंगे तथा

आपको सज्जन एवं श्रेष्ठ व्यक्तियों की संगति प्राप्त होगी। पुखराज रत्न श्रीमान और कुलीन लोगों से आपकी मित्रता बनाएगा। रत्न की शक्तियां आपकी आशाओं और महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने में सहयोग करेंगी। आपको अर्थलाभ और धन की प्राप्ति देगी। पुखराज रत्न से आपकी आमदनी के अनेक साधन होंगे। यह रत्न आपको पराक्रमी, पिता का सहायक और शत्रुओं को पराजित करने वाला बनाएगा।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में गुरु लग्नेश एवं चतुर्थेश है। गुरु आपके लिए विशेष शुभ ग्रह है अतः आप गुरु रत्न पुखराज धारण कर गुरु की पूर्ण शुभता प्राप्त कर सकते हैं। पुखराज रत्न धारण से आपको स्वास्थ्य बेहतर होगा। आपके रोगग्रस्त होने की संभावनाएं कम हो सकती हैं। पुखराज रत्न आपको प्रसन्नचित्त, विवेकी, विनम्र और सौम्य स्वभाव का स्वामी बनाएगा। रत्न प्रभाव से आप धर्म, दया, सेवा विषयों से जुड़ेंगे। पुखराज रत्न चतुर्थेश का रत्न होने के कारण आपको माता सुख, भूमि-भवन का सुख, संतान से पूर्ण सुख, विद्वान, गुणी, मनोवांछित जीवनसाथी, धर्मपरायण, धनी एवं यशस्वी बना सकता है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ॐ वृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरूरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थों का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार हैं- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर 8 रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

### माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य नवम भाव में स्थित है। सूर्य रत्न माणिक्य आपके लिए शुभ रत्न है। अतः आप माणिक्य रत्न धारण करें। माणिक्य रत्न शुभता आपको लम्बी दूरी की यात्राएं करवाएगी। धर्म-कर्म एवं परोपकार से जुड़े कार्यों में आपकी सहभागिता बढ़ेगी। रत्न प्रभाव आपको अपने परिवार के अत्यधिक निकट लायेगा। पिता से संबंध मधुर होकर मजबूत होंगे। सूर्य रत्न माणिक्य आपको शिक्षा के क्षेत्र में उत्तम फल देगा। उच्च शिक्षा प्राप्ति में माणिक्य रत्न शुभ फलदायक रत्न है। रत्न प्रभाव से विदेश गमन के योग बन सकते हैं।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में सूर्य दशम भाव के स्वामी है। सूर्य के बेहतर फल प्राप्त करने के लिए आप सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर सकते हैं। माणिक्य रत्न आपका भाग्य रत्न है। यह रत्न आपको भाग्य का अनुकूल सहयोग देगा। माणिक्य रत्न धारण कर आप आत्मिक रूप से बली हो सकते हैं। यह रत्न आपको शक्तिशाली कर सकता है। आप धर्मपरायण की ओर उन्मुख होंगे। आपकी सुरुचि धार्मिक गतिविधियों की ओर हो सकती है। माणिक्य रत्न आपके वैवाहिक सुख के सुखों में वृद्धि करेगा। आपको व्यापार में उन्नति देगा।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत्त होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ॐ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तदपश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ हैं तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

### लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु पंचम भाव में स्थित है। आपको केतु रत्न लहसुनिया धारण करना चाहिए। लहसुनिया रत्न धारण कर आप वाहन सुखों में बढ़ोतरी कर सकते हैं। यह रत्न आपको तीर्थयात्रा एवं विदेश प्रवास देगा। रत्न की शुभता से आपके पराक्रम और नौकरी क्षेत्र में सफलता देगा। आपको अनेक सेवकों का सुख प्राप्त होगा। आप छल-कपट से दूर रहने का प्रयास करेंगे। केतु रत्न लहसुनिया आपको आंशिक धैर्यहीन बना सकता है। इसकी शुभता से आपके नकारात्मक विचारों का अंत होगा। सगे भाईयों से विवाद समाप्त होंगे।

केतु मेष राशि में स्थित है व इसका स्वामी मंगल सप्तम भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपके वात रोगों में कमी होगी। यह रत्न आपके दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाएगा। इस रत्न की शुभता से आपके अपने जीवनसाथी से स्नेह और सौहार्द के संबंध प्रगाढ़ होंगे। आपके स्वभाव में मधुरता आएगी। आप बंधुप्रिय, मधुर भाषी और स्वतंत्र व्यवसाय कार्य में सफल होंगे। इस रत्न से आपका अपने साझेदार और साथी पर विश्वास भाव मजबूत होगा। विदेश स्थानों से धन लाभ प्राप्त करना आपके लिए सहज होगा। एवं यह रत्न आपको विदेश में सम्मान दिलाएगा। आपको विदेश भ्रमण के अवसर प्राप्त होंगे।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूठी में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ॐ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार हैं- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ

माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

### गोमेद

आपकी कुंडली में राहु एकादश भाव में स्थित है। आपको राहु रत्न गोमेद धारण करना चाहिए। यह गोमेद रत्न आपके जीवन के कष्टों को कम करेगा। इसके शुभ प्रभाव से आप परिश्रमी, विलासी और सहृदय व्यक्ति बनेंगे। गोमेद रत्न प्रभाव से आप अपनी इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखने में सफल होंगे। आप बड़े स्तर पर प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। गोमेद की शुभता आपको धनवान और विभिन्न भोगों को भोगने वाला बनाएगी। आपकी मित्रता चतुर व्यक्तियों के साथ होगी। यह रत्न आपको धोखा और ठगी के माध्यम से धन अर्जन करने से रोकेगा।

राहु तुला राशि में स्थित है व इसका स्वामी शुक्र एकादश भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न आपको अनेक क्षेत्रों से आय प्राप्त के स्रोत देगा। यह रत्न आपको विवाद विजयी, विनोदी और स्वाभिमानी बनाएगा। इस रत्न को धारण करने पर आप वाहन आदि से सुखी होंगे। परदेश में यह आपका भाग्योदय करेगा। रत्न प्रभाव से आप अत्यधिक महत्वकांक्षी हो सकते हैं। यह रत्न आपको व्यवसायी, सरकार से प्रतिष्ठा एवं व्यावसायिक लाभ प्राप्त करेंगे। रत्न शुभता आपको अन्न, वस्त्र, अलंकार, धन, पशु, वाहन आदि से सुखी करेगी। इसके अतिरिक्त इस रत्न को धारण करने पर आप धन-धान्य से युक्त होंगे। यह रत्न आपके अहंकार भाव को भी नियंत्रित रखेगा।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूठी में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ॐ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

### पन्ना

आपकी कुंडली में बुध दशम भाव में स्थित है। आपको बुध रत्न पन्ना धारण करना चाहिए। पन्ना रत्न आपकी न्यायप्रियता और नीतिनिपुणता में वृद्धि करेगा। रत्न शुभता आपको विवेकवान। गुणवान और सत्यवादी व्यक्ति बनेंगे। यह रत्न आपके धैर्य और विनम्रता को बढ़ाएगा। परिस्थिति अनुसार बोलने का कौशल यह रत्न पन्ना आपको दे सकता है। रत्न प्रभाव आपको यशस्वी और व्यवहार कुशल बनाएगा। रत्न धारण करने के बाद आपको विभिन्न प्रकार के वाहनों का सुख प्राप्त होगा। रत्न शुभता आपको धनाढ्य और संपत्तिवान बनाएगी। व्यापार के माध्यम से लाभ, सफलता दोनों देगा।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में बुध सप्तमेश एवं दशमेश है। आप बुध रत्न पन्ना धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न आपको बुद्धिमान और विनोदी प्रवृत्ति दे सकता है। यह रत्न आपको राज्य एवं आजीविका क्षेत्र में बौद्धिक योग्यता से सफलता प्राप्त दे सकता है। कार्यक्षेत्र में उन्नति और लाभ देने के साथ साथ पन्ना रत्न आपको सहयोगियों से संबंध मधुर कर सकता है। पन्ना रत्न धारण कर आप ससुराल से धन प्राप्ति के योग बना सकता है। बुध रत्न पन्ने की शुभता आपको धन, यश भी दे सकती है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत्त होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ॐ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंगा, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न ३ रत्ती का कम से कम, अन्यथा ६ रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

### मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल सप्तम भाव में स्थित है। आपको मंगल रत्न मूंगा धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने से आपका वैवाहिक जीवन सुखमय बनाये रखने में सहयोग प्राप्त होगा। रत्न की शक्तियां आपकी मेहनत प्रवृत्ति का विस्तार करेंगी। क्रोध में कमी करने के लिए भी मूंगा रत्न धारण करना सही रहेगा। इस रत्न को धारण करने से आपकी वाणी की कठोरता में कमी होगी। व्यर्थ के व्यर्थों पर नियंत्रण होगा। आर्थिक पक्ष से मूंगा रत्न आपके लिए शुभ फलदायक सिद्ध होगा। आजीविका क्षेत्र में अपने नेतृत्व गुण का विकास करने के लिए आप मूंगा रत्न धारण करें।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में मंगल पंचमेश एवं द्वादशेश है। मंगल रत्न मूंगा आपके लिए शुभ रत्न है। मूंगा रत्न धारण करने से नौकरी में बदलाव करना आपके लिए सहज हो सकता है। मूंगा रत्न आप सदाचारी, बुद्धिमान एवं विनम्र हो सकते हैं। रत्न आपको जीवनसाथी से लाभ, पिता की धार्मिक आस्था, पिता की विदेश यात्रा, कोर्ट-कचहरी के फैसलों में आपके अनुकूल फल प्राप्त करा सकता है। इस रत्न की शुभता आपको संतान से सुख, शयन सम्बन्धी परेशानियां एवं समझौते आपके पक्ष में हो सकते हैं।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ॐ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती

से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते हैं।

### नीलम

आपकी कुंडली में शनि तीसरे भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम रत्न आपके रोगों में कमी करेगा। आध्यात्म की ओर उन्मुख करेगा। यह रत्न आपको विद्वान, चतुर, विवेकी, शत्रुहंता बनायेगा। नीलम रत्न धारण करने से आप बुद्धिमान, दयालु और न्यायकर्ता बनेंगे। शनि रत्न नीलम आपके भाग्य को प्रबल करेगा। सफलता के संघर्ष और कठोर परिश्रम में करेगा। भाईयों से संबंध मधुर करेगा। संतान सुख के योग बनायेगा।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में शनि दूसरे भाव एवं तीसरे भाव के स्वामी है। शनि शुभता प्राप्ति के लिए आप शनि रत्न नीलम धारण कर सकते हैं। नीलम रत्न आपकी शरीर की अस्वस्थता को दूर करने का प्रयास कर सकता है। नीलम रत्न की शुभता से आपको धन व परिवार का सुख प्राप्त होता रहेगा। यह रत्न आपके पराक्रम भाव को बढ़ाएगा। मित्र बंधुओं का सहयोग पाने के लिए भी आप नीलम रत्न धारण कर सकते हैं। नीलम रत्न की शुभता से आपको कार्यक्षेत्र में अनुकूल परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। यह रत्न सरकारी क्षेत्रों से जुड़े कार्यों के मध्य आने वाली बाधाओं में कमी कर सकता है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ॐ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

### हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र एकादश भाव में स्थित है। शुक्र ग्रह की पूर्ण शुभता प्राप्त करने के लिए आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। हीरा रत्न आपको उदार, सदाचार संपन्न, सुशील और परोपकारी बनाएगा। हीरा रत्न से आप अपने वाकचातुर्य के कारण प्रसिद्ध

होंगे। अनेक वाहनों का सुख आपको यह रत्न दे सकता है। शुक्र रत्न हीरे की शुभता आपको समृद्धि और सम्पन्नता देगी। इस रत्न प्रभाव से नियमित रूप से आपके पास धनागमन होता रहेगा और दिनों दिन धनवृद्धि होती जाएगी।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में शुक्र एकादशेश एवं षष्ठेश है। शुक्र रत्न हीरा आपके आय क्षेत्रों को प्रशस्त करेगा। अपनी उच्चभिलाषाओं को प्राप्त करने के लिए भी आप यह हीरा रत्न धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न आपके शत्रुओं में कमी कर सकता है। शत्रुओं को परास्त करने के लिए भी आप हीरा रत्न धारण कर सकते हैं। रत्न शुभता से आपके परिश्रम भाव में बढ़ोतरी हो सकती है। रत्न प्रभाव से आप रोग, ऋणों पर नियंत्रण रखने में सफल हो सकते हैं। शुक्र रत्न आपको प्रतियोगिताओं में सफलता दिला सकता है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूठी में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ॐ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा रत्नी से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

### मोती

आपकी कुंडली में चंद्रमा प्रथम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः चंद्र रत्न मोती धारण करने से आपके व्यवहार की सौम्यता में कमी होगी। आपको सामाजिक स्तर पर घूलने मिलने में समय लग सकता है। मोती रत्न के प्रभाव से आप अत्यधिक संवेदनशील और अव्यवहारिक हो सकते हैं। यथार्थ परिस्थितियों का सामना करने में आपको असहजता रहेगी। इस रत्न से आपका स्वभाव सदैव चिंतित रहने वाला हो सकता है। सृजनात्मक और रचनात्मक कार्यों में आपको अरुचि की स्थिति बन सकती है। आपकी लोकप्रियता के लिए भी यह रत्न सही नहीं होगा। मानसिक अशांति के चलते जीवन के अन्य विषयों में एकाग्रता की कमी का अनुभव आपको हो सकता है।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में चंद्र अष्टम भाव के स्वामी है। अष्टमेश चंद्र का मोती रत्न धारण करना आपके लिए कष्टकारी हो सकता है। मोती रत्न आपके रोगों में वृद्धि एवं आयु में कमी दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपको गहरे जल से कष्ट का भय हो सकता है। मोती रत्न आपको नकारात्मक विचारधारा के साथ मानसिक चिंताएं भी अधिक दे सकता है। इस रत्न को पहनने के बाद आप आर्थिक संकटों के कारण दरिद्रता की स्थिति में पहुंच सकते हैं। मोती रत्न की प्रतिकूलता आपको दुर्भाग्य और ससुराल पक्ष से संबंध खराब कर सकती है। यह

रत्न आपके जीवन के सुखों में कमी कर दुःखों में वृद्धि कर सकता है। इस रत्न को धारण करने पर आपको जल के कारण होने वाले रोग हो सकते हैं।

### दशानुसार रत्न विचार

#### राहु

(22/09/2024 - 23/09/2042)

राहु की दशा में आपका पुखराज, माणिक्य व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, नीलम, हीरा व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा रत्न नेष्ट हैं और मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

#### गुरु

(23/09/2042 - 23/09/2058)

गुरु की दशा में आपका माणिक्य व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, गोमेद, मूंगा, नीलम व पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

हीरा व मोती रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

#### शनि

(23/09/2058 - 22/09/2077)

शनि की दशा में आपका पुखराज व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, नीलम, पन्ना, हीरा व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा रत्न नेष्ट हैं और मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

**बुध**  
**(22/09/2077 - 23/09/2094)**

बुध की दशा में आपका माणिक्य, पुखराज व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, गोमेद, हीरा, मूंगा व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

**केतु**  
**(23/09/2094 - 23/09/2101)**

केतु की दशा में आपका पुखराज, माणिक्य व लहसुनिया रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा, पन्ना, हीरा व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम रत्न नेष्ट हैं और मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

## शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - टोपाज

आपका जन्म धनु राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी गुरु होता है। गुरु सबसे अधिक महत्वपूर्ण ग्रह है क्योंकि यह ज्योतिष शास्त्र में सबसे शुभ ग्रह माना जाता है तथा गुरु को ज्योतिष में अमृत के समान माना जाता है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः धनु राशि के लग्न वाले जातकों को धनु राशि के स्वामी ग्रह गुरु को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। गुरु ग्रह के लिये टोपाज रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात् जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी गुरु सलाहकार एवं धन का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को सभा में वाणीपटुता के कारण मार्गदर्शक के रूप में सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को घर के बुजुर्गों तथा गुरुओं का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है। गुरु ग्रह ज्ञान एवं धन लाभ का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको लीवर या गुर्दे से संबंधित रोग हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा जिसको धन आगमन में व्यवधान हो रहे हों उनको यह रत्न अल्प प्रयास से धन प्राप्ति करवाता है।

टोपाज रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की तर्जनी अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि तर्जनी अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में गुरु की अंगुली मानी जाती है। टोपाज रत्न गुरु का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात् गुरुवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल गुरु की होरा में श्रेष्ठ होता है। गुरुवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय गुरु की होरा का होता है। टोपाज को यदि गुरुवार के साथ-साथ गुरु के नक्षत्र अर्थात् पुनर्वसु, विशाखा और पूर्वा भाद्रपद में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

टोपाज को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पट्टे पर पीले रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, गुरु के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की तर्जनी अंगुली में धारण करना चाहिए।

गुरु का मंत्र - ॐ वृं वृहस्पतये नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि गुरु से संबंधित पदार्थ जैसे चने की दाल, गुड़, सवा मीटर पीले कपड़े का दान करें तो टोपाज रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक

फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन गुरु का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें और केले की जड़ में जल दें तथा विष्णु सहस्रनाम का पाठ करें और उनकी उपासना करें तो यह टोपाज रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक गुरुवार को विष्णु जी की उपासना करें तथा विष्णु जी को गुड़ व चने की दाल का भोग लगायें तो यह और अधिक शुभकारी हो जाता है।

धनु लग्न वाले जातक यदि टोपाज रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।



## रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ेतरा कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

### आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली धनु लग्न की हैं। आदर्शवादी होने के कारण आप उत्साही रहते हैं। छल-कपट की भावना आपमें नहीं होती और कभी इनके साथ ऐसा होने पर ये लोग काफी समय तक उस बारे में सोचते रहते हैं, तो इन्हें अपनी इस आदत का बदलने का प्रयास करना चाहिए। जीवन में आपके धन संयम/प्रबंधन (वर्तमान में वित्तीय प्रबंधक या सलाहकार) की कला से ओतप्रोत बने रह सकते हैं। आपमें दूरदर्शिता का गुण भी देखा जाता है जिस कारण इनके कार्यों में हानि की मात्रा में भी कमी आती है।

ईश्वरप्रिय होने के कारण गलत कार्यों से दूरी बनाये रखते हैं और कभी-कभी चिन्तित भी हो जाते हैं। आप हमेशा प्रसन्नचित्त अवस्था में रहने का प्रयास करते हैं। आप अपनी

बातों में गंभीरता लिये होते हैं। धनी, सम्मानित और समाज में प्रतिष्ठित होने की योग्यता रखते हैं। आप अच्छे सलाहकार साबित हो सकते हैं, परन्तु बिना मांगे किसी को सलाह देने से बचें अन्यथा आलोचना के पात्र बन सकते हैं। आपकी वित्त प्रबंधन / सलाह अच्छी होती है।

षष्ठ, अष्टम व द्वादश भाव दुष्ट व अशुभ स्थान हैं। अपनी कुंडली की शुभता में वृद्धि करने के लिए आपको छः, आठ व बारहवें भाव - भावेश को शुभता प्रदान करनी होगी। कुंडली के ये भाव आपको रोग, ऋण, शत्रु, बाधाएं, देने के साथ साथ दैहिक, सामाजिक, मानसिक, आर्थिक या पारिवारिक कष्ट दे सकते हैं। इन सभी विषयों के साथ साथ षष्ठ भाव प्रतियोगिता, संघर्ष तथा सौतेली माता का भी भाव है।

कुंडली में षष्ठ भाव का पीड़ित होना या इस भाव में अन्य ग्रहों का स्थित होना उपरोक्त सभी वस्तुओं में अशुभता लाता है। धन, मृत्यु का कारण व समय, अवनति तथा राज्यभंग लग्न से आठवां भाव अष्टम कहलाता है। इस भाव से आयु, बिना कमाया हुआ धन, मृत्यु का कारण व समय, अवनति तथा राज्यभंग की जानकारी प्राप्त होती है। अष्टम भाव की तरह द्वादश भाव में भी सभी ग्रह अनिष्ट करते हैं। द्वादश भाव भी त्रिक भाव है। यह भाव आपकी निद्रा, धन का निवेश, विवाह में विलम्ब, अधिकार का नाश, कैद, शरीर विकार तथा हानियों की जानकारी देता है।

6, 8, 12 भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं। व 6, 8, 12 भाव के स्वामी तथा इन भावों में स्थित ग्रह अपनी महादशा-अन्तर्दशा में अनिष्ट तथा अशुभ फल देते हैं।

आपके लग्न के लिए शुक्र षष्ठेश व एकादशेश है, आप की संतान विद्रोही हो सकती है, जीवन साथी से अनबन, मन में खिन्नता, व्यभिचारी तथा बन्धु विरोधी हो सकते हैं।

चन्द्र अष्टमेश हैं। आपके धनु लग्न में अष्टमेश चन्द्र है, चन्द्र की यह स्थिति आपको बचपन में कष्ट, पानी के दुष्प्रभाव से होने वाले रोगों के प्रभाव में शीघ्र आने की संभावना, यह योग धन व सम्मान की हानि का कारण बनता है।

मंगल द्वादशेश तथा पंचमेश होते हैं। व्यय अधिक, विद्या व बुद्धि से अल्प लाभ, संतान से न्यून सुख, भाई-बहनों से सामान्य सुख, सामान्य पराक्रमी, शत्रु से संघर्ष में सफल, जीवन साथी से कष्ट दे सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 2, 3, 6 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती है।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए।  
क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए  
आवश्यक हैं।



## साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

### प्रथम चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/06/1995-10/08/1995 16/02/1996-17/04/1998	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	06/09/2004-13/01/2005 26/05/2005-01/11/2006 10/01/2007-16/07/2007	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	02/11/2014-26/01/2017 21/06/2017-26/10/2017	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	26/01/2017-21/06/2017 26/10/2017-24/01/2020	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	24/01/2020-29/04/2022 12/07/2022-17/01/2023	-----

### द्वितीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/03/2025-03/06/2027 20/10/2027-23/02/2028	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	08/12/2046-06/03/2049 10/07/2049-04/12/2049	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	06/03/2049-10/07/2049 04/12/2049-25/02/2052	-----

### तृतीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	14/05/2054-02/09/2054 05/02/2055-07/04/2057	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	24/08/2063-06/02/2064 09/05/2064-13/10/2065 03/02/2066-03/07/2066	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	05/02/2073-31/03/2073 23/10/2073-16/01/2076 11/07/2076-11/10/2076	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	16/01/2076-11/07/2076 11/10/2076-15/01/2079	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	15/01/2079-12/04/2081 03/08/2081-07/01/2082	-----

### शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	सुख
अष्टम स्थानस्थ ढैया	अशुभ	दुर्घटना
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	अशुभ	व्यय
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	सम	स्वास्थ्य
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	शुभ	धन

## साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

**ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।**

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।  
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

**ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।**

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

**ॐ शं शनैश्चराय नमः ।**

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

## मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।  
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

\*\*\*\*\*

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति सप्तम भाव में है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं चूंकि आपका मांगलिक दोष भंग नहीं हो रहा है। अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। साथ ही स्वभाव से ही उनमें उग्रता रहेगी। यदा कदा परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं लेकिन यह अल्प समय के लिए होगा तथा दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। साथ ही आप भी यदा कदा पित या गर्मी आदि से परेशानी की अनुभूति कर सकते हैं। मंगल के इस प्रभाव से आपके विवाह कार्य में विलम्ब होने की संभावना रहेगी तथा विवाह से पूर्व वार्ताओं में भी गतिरोध रहेगा लेकिन अंत में आप को सफलता अवश्य प्राप्त होगी तथा सामान्य रूप से दाम्पत्य जीवन में प्रसन्नता बनी रहेगी।

सप्तम भावस्थ मंगल के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा पित जन्म दोषों से आपको परेशानी हो सकती है। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि से कार्य क्षेत्र में आप परिश्रम एवं पराक्रम से इच्छित सफलता अर्जित करेंगे। समाज से भी न्यूनाधिक मान सम्मान की प्राप्ति होती रहेगी। लग्न पर दृष्टि के प्रभाव से स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा। यदा कदा मानसिक अशान्ति की भी अनुभूति हो सकती है। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद उत्पन्न होंगे जिससे परिवार की शान्ति प्रभावित होगी लेकिन इसका दुष्प्रभाव अल्प मात्रा में ही रहेगा।

अतः अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं सम्पन्न बनाने के लिए आपको किसी ऐसे मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे आपका परस्पर मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम,

अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इससे आपके सुख सौभाग्य एवं ऐश्वर्य में वृद्धि होगी तथा सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा। आपसी संबंधों में भी मधुरता तथा सहयोग का भाव विद्यमान रहेगा।



## कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।  
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

### जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

## पितृदोष विचार

### पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

### पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

### पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

### पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

**ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।**

**नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥**

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

### **पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :**

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

### **आपकी कुण्डली में पितृदोष**

- सूर्य नवम् भाव में स्थित है तथा उस पर शनि का प्रभाव है।
- पंचम् भाव में केतु स्थित है एवं शनि से दृष्ट है।
- पंचम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।
- नवम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुण्डली में सूर्य, मंगल और केतु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें। रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं।

आपकी कुण्डली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुण्डली में केतु पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पूर्वज द्वारा

किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ काले कुत्ते को मीठी रोटी खिलाएं। रंगबिरंगी चिड़ियों को दाना डालें। नारियल का दान करें या जल प्रवाह करें। ब्राह्मणों की सेवा कर आशीर्वाद प्राप्त करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

### नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह सूर्यबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

## ग्रह फल

### सूर्य

नवमभाव में सूर्य होतो जातक साहसी, ज्योतिषी, नेता सदाचारी, तपस्वीयोगी, वाहनसुख, भृत्यसुख एवं पिता के लिए अशुभ होता है।

सिंह राशि में रवि हो तो जातक सत्संगी पुरुषार्थी, योगाभ्यासी, वनविहारी, कोधी, गम्भीर, उत्साही, तेजस्वी एवं धैर्यशाली होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य नवम भाव में स्थित है अतः आप पिता के स्नेह पात्र होंगे। उनका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। जीवन में धन सम्पत्ति से सर्वदा युक्त रहेंगे एवं समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आपके भाग्योदय संबंधी कार्यों में भी उनकी आपके लिए पूर्ण प्रेरणा तथा सहयोग का भाव रहेगा।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगे एवं उनकी आज्ञा पालन तथा सेवा करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद उत्पन्न होने के कारण इनमें अल्प मात्रा में तनाव या कटुता का समावेश का आभास होगा जो कुछ समयोपरान्त स्वतः ही समाप्त हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी हार्दिक सहायता करेंगे एवं सुख दुःख में उनको पूर्ण वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से अपना सहयोग प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर रहेंगे।

### चन्द्र

लग्न (प्रथम) में चन्द्रमा हो तो जातक बलवान्, सुखी, स्थूलशरीर, गान वाद्य प्रिय, ऐश्वर्यशाली, व्यवसायी, उदार, धनी एवं विद्वान होता है।

धनु राशि में चन्द्रमा हो तो जातक वक्त, सुन्दर, शिल्पज्ञ, शत्रुविनाशक उच्च बौद्धिक स्तर वाला, सुखी विवाहित जीवन, विरासत में धन सम्पत्ति पाने वाला, साहित्य के प्रति रुचि का दिखावा करने वाला एवं लेखक होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति लग्न में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य आपके ग्रहों के शुभप्रभाव से अच्छा रहेगा एवं वे लम्बी आयु प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति की भी उनको प्राप्ति होगी तथा इससे वे प्रायः युक्त ही रहेंगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में सभी शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको यथोचित सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। आपके परस्पर अच्छे संबंध रहेंगे एवं आपसी मतभेदों की अल्पता रहेगी।

आप भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा आदर की भावना रखेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। इससे आप लोगों के आपसी विश्वास में वृद्धि होगी जो भविष्य में उन्नति दायक रहेगी। इस प्रकार आप भी जीवन में उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे।

## मंगल

सातवें भाव में मंगल हो तो जातक वातरोगी, राजभीरु, शीघ्रकोपी, कटुभाषी, स्त्रीदुःखी, धूर्त, मूर्ख, निर्धन, घातकी, धननाशक एवं ईर्ष्यालु होता है।

मिथुन राशि में मंगल हो तो जातक शिल्पकार, परदेशवासी, कार्यदक्ष, सुखी, जनहितैषी, विद्वान, बलवान शरीर, कवि, संगीतकार, नीतिज्ञ, कुशाबुद्धिवाला एवं चतुर होता है।

आपके जन्म काल में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी वे अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान की भावना व्याप्त रहेगी तथा हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह संबंधी या व्यापार संबंधी कार्यों में भी वे अपना यथाशक्ति योगदान देंगे तथा सदैव आपकी सफलता की कामना करेंगे। इसके साथ ही सुख दुःख में वे आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप की भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनको समस्त महत्वपूर्ण कार्यों एवं क्षेत्रों में अपना सहयोग प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उसमें तनाव या कटुता आएगी परन्तु कुछ समय पश्चात् सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही उनकी शादी या व्यापार आदि कार्यों में भी आप उनकी वांछित सहायता करते रहेंगे।

## बुध

दशमभाव में बुध हो तो जातक सत्यवादी, मनस्वी, व्यवहार कुशल, लोकमान्य, विद्वान, लेखक, कवि जमींदार, मातृ-पितृ भक्त, राजमान्य, न्यायी एवं भाग्यवान् होता है।

कन्या राशि में बुध हो तो जातक वक्ता, कवि, साहित्यिक, लेखक, सम्पादक, ज्योतिषी, खगोलशास्त्री, गणितज्ञ, अध्यापक, उदार, सुखी एवं अच्छा चरित्र वाला होता है।

## गुरु

ग्यारहवें भाव में गुरु हो तो जातक व्यवसायी, धनिक, सन्तोषी, सुन्दरनिरोगी, लाभवान्, पराकमी, सद्ब्ययी, बहुस्त्रीयुक्त, विद्वान् राजपूज्य एवं अल्पसन्ततिवान् होता है।

तुला राशि में गुरु हो तो जातक सुन्दर, उदार, बली, योग्य धार्मिक, प्रवृत्ति, निष्पक्ष, बुद्धिमान्, व्यापार कुशल, कवि, लेखक, सम्पादक, बहुपुत्रवान् एवं सुखी होता है।

## शुक्र

ग्यारहवें भाव में शुक्र हो तो जातक परोपकारी, लोकप्रिय, जौहरी, विलासी,

वाहनसुखी, स्थिरलक्ष्मीवान्, धनवान् गुणज्ञ, कामी एवं पुत्रवान् होता है।

तुला राशि में शुक हो तो जातक विलासी, कलानिपुण, प्रवासी, यशस्वी, कार्यदक्ष, कुशाबुद्धि, उदार, दार्शनिक, सुन्दर, सुखी विवाहित जीवन, अभिमानी, बौद्धिक कामों में रुचि, कविता और उपन्यास लिखने में रुचि एवं संतुलित स्वभाव होता है।

### शनि

तृतीय भाव में शनि हो तो जातक नीरोगी, विद्वान् योगी, मल्ल, शीघ्रकार्यकर्ता, सभाचतुर, चंचल, भाग्यवान्, शत्रुहन्ता, एवं विवेकी होता है।

कुम्भ राशि में शनि हो तो जातक नीतिदक्ष, कुशा बुद्धि, शक्तिशाली शत्रु, योग्य, सुखी, व्यसनी, नास्तिक एवं परिश्रमी होता है।

### राहु

ग्यारहवें भाव में राहु हो तो जातक परिश्रमी, अल्पसन्तान, विदेशियों से धनलाभ, दीर्घायु, मन्दमति, लाभहीन, अरिष्टनाशक, व्यवसाययुक्त, कदाचित् लाभदायक एवं कार्य सफल करने वाला होता है।

तुला राशि में राहु हो तो जातक अल्पायु, दाँतों के रोग, विरासत में धन पाने वाला एवं कार्य कुशल होता है।

### केतु

पंचम भाव में केतु हो तो जातक वातरोगी, कुचाली, कुबुद्धि, सन्तान को नष्ट करता है, योगी, कुशाग्रबुद्धि एवं क्रोधी होता है।

मेष राशि में केतु हो तो जातक चंचल, बहुभाषी एवं सुखी होता है।

## स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। सामान्यतया धनु लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ एवं बलवान होते हैं यद्यपि इनका स्वभाव शांत होता है तथापि यदा कदा अभिमान के भाव का ये प्रदर्शन करते रहते हैं। ये धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति होते हैं तथा अत्यंत ही बुद्धिमता से अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करके सफलता प्राप्त करते हैं फलतः जीवन में धनैश्वर्य वैभव एवं सुखसंसाधनों को अर्जित करने में समर्थ रहते हैं। आदर्शवाद एवं अध्यात्मिकता के मध्य प्रवृत्त होकर भौतिक सुखों का उपभोग करते हैं। ये अपने समस्त कार्यों को नियमानुसार करते हैं। अन्य जनों के ये विश्वासपात्र होते हैं परन्तु स्वयं अन्य जनों पर विश्वास कम ही करते हैं दानशीलता की भावना भी इनमें विद्यमान रहती है तथा समाज में मान प्रतिष्ठा तथा यश अर्जित करने में समर्थ रहते हैं। राजनीति कानून गणित या ज्योतिष शास्त्रादि में इनकी रुचि रहती है तथा परिश्रम पूर्वक इन क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करते हैं। इन्हें हमेशा प्रेम एवं स्नेह की भाव से ही वश में किया जा सकता है अन्य भौतिक प्रलोभनों का इन पर कोई प्रभाव नहीं होता है।

इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं शक्ति शाली रहेंगे तथा परिश्रम एवं बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता प्राप्त करेंगे। आप अध्ययनशील व्यक्ति होंगे तथा विभिन्न विषयों के ज्ञान अर्जित करने में सफल होंगे। आप एक निश्चित आदर्श को लेकर जीवन में संघर्षशील रहेंगे तथा किसी अन्य के प्रति अनावश्यक द्वेष या ईर्ष्या का भाव नहीं रखेंगे। अतः समाज में आप आदरणीय रहेंगे। शत्रु एवं विरोधी पक्ष से भी आप उदारता का व्यवहार करके उन्हें प्रभावित करेंगे। साथ ही अपनी व्यवहार कुशलता से कार्य क्षेत्र में उन्नति प्राप्त करके सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे।

लग्न में चन्द्रमा की स्थिति के प्रभाव से आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा स्वरूप भी सुन्दर एवं दर्शनीय होगा। आपकी सम्भाषण शक्ति प्रबल रहेगी तथा अपने ओजस्वी वक्तव्यों से अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगे। शत्रु या प्रतिद्वन्दियों को पराजित तथा भयभीत करने में आप समर्थ होंगे अतः प्रतियोगी परीक्षा या व्यापारादि में आप इच्छित सफलता प्राप्त करेंगे एवं कार्यक्षेत्र में भी उन्नति के मार्ग प्रशस्त रहेंगे।

आप में सहनशीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा कठिन एवं विषम परिस्थितियों में धैर्य एवं सहनशीलता के साथ समय का सामना करेंगे जिससे अंततोगत्वा आपको सफलता प्राप्त होगी साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग के आप प्रिय एवं विश्वसनीय रहेंगे तथा इनसे आपको समय समय पर इच्छित मात्रा में धनार्जन होता रहेगा।

आप में आस्तिकता का भाव विद्यमान होगा फलतः धर्म के प्रति आपकी श्रद्धा रहेगी तथा निष्ठापूर्वक धार्मिक कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे तथा तीर्थयात्रा में भी रुचि रहेगी। मित्र एवं बन्धुवर्ग में आप प्रिय एवं आदरणीय होंगे तथा उनसे आपको इच्छित लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा। इस प्रकार आप शांत सहनशील बुद्धिमान तथा व्यवहार कुशल व्यक्ति होंगे एवं आनंद पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करने में समर्थ रहेंगे।

## धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप अन्य जनों से अपना वायदा पूरा नहीं करेंगे तथा अपना अधिकांश समय अनावश्यक वार्तालाप में ही व्यतीत करेंगे। आप इतनी बातूनी प्रकृति के व्यक्ति होंगे कि अन्य लोग आसानी से आप पर काबू नहीं पा सकते हैं। आपका स्वभाव आधुनिक विचारों से युक्त रहेगा तथा विनम्रता का भाव भी विद्यमान रहेगा। आपकी एक मुख्य विशेषता यह रहेगी कि आप किसी को भी अनावश्यक रूप से अपना मित्र नहीं बनाएंगे तथा अत्यंत ही सोच समझकर ही किसी से मित्रता करेंगे जब आप पूर्ण रूप से सन्तुष्ट हो जाएंगे।

आप आंतरिक मन से पारिवारिक जनों की पूर्ण चिंता करेंगे परन्तु प्रत्यक्ष में उपेक्षा के भाव को ही प्रदर्शित करेंगे। इससे कई बार पारिवारिक जनों के मध्य अनावश्यक मतभेद की भी संभावना रहेगी तथापि उनसे आपको पूर्ण सुख तथा सहयोग मिलता रहेगा तथा परिवार की खुशहाली के लिए आप सदैव प्रयत्न तथा परिश्रमशील रहेंगे। आप विभिन्न स्वादों के प्रिय रहेंगे तथा अवसरानुकूल इनका आस्वादन करते रहेंगे। वृद्धावस्था में आपको नेत्र संबन्धी कष्ट की भी संभावना रहेगी। इसके अतिरिक्त नौकरी या अन्य साधनों से आप इच्छित मात्रा में धनार्जन करेंगे। साथ ही विदेश भ्रमण आदि से भी लाभ की संभावना रहेगी। इस प्रकार वैभवशाली जीवन व्यतीत करने में आप समर्थ रहेंगे।

## शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में मीनराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आपको समस्त सांसारिक एवं भौतिक सुखों को प्राप्ति होगी तथा आधुनिक सुख संसाधनों से भी युक्त होंगे एवं आनन्दपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आप एक वैभवशाली व्यक्ति भी होंगे तथा समाज में अपना यथोचित स्तर बनाए रखने में समर्थ होंगे।

आप एक भाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा जीवन में आपको चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपको किसी श्रेष्ठ या वृद्ध व्यक्ति से वांछित मात्रा में चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति हो सकती है। स्वपरिश्रम, बुद्धिमता एवं योग्यता से भी आप इच्छित धन सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगे। आपको अचल सम्पत्ति की अपेक्षा चल सम्पत्ति से विशिष्ट एवं शीघ्र लाभ के योग बनते हैं। अतः चल सम्पत्ति पर विशेष निवेश करना चाहिए।

जीवन में आपको सुन्दर विस्तृत एवं आकर्षक आवास की प्राप्ति होगी तथा आधुनिक सुख-सुविधाओं एवं भौतिक उपकरणों से यह सुसज्जित रहेगा। इसकी स्वच्छता का आप विशेष ध्यान रखेंगे तथा अन्य पारिवारिक जनों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगे। आपका घर किसी समृद्ध कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे तथा संबंधों में अनुकूलता रहेगी। इसके अतिरिक्त आप प्रारंभ से ही उत्तम वाहन प्राप्त करेंगे तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगे।

आपकी माताजी शिक्षित, बुद्धिमान एवं सरल स्वभाव की महिला होगी तथा अपनी कर्तव्य परायणता तथा उत्तम कार्य कलापों से सभी सदस्यों को प्रसन्न तथा प्रभावित रखेंगी। परिवार के सभी लोग उन्हें वांछित आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट वात्सल्य भाव होगा तथा समय समय पर उनसे आपको वांछित नैतिक, आर्थिक एवं अन्य प्रकार से सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। आपकी चहुमुखी उन्नति में उनका विशेष योगदान रहेगा। आपकी माता के प्रति श्रद्धा एवं आज्ञाकारिता का भाव रखेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। इससे आपके परस्पर संबंधों में मधुरता बनी रहेगी।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपकी रुचि रहेगी तथा छोटी कक्षाओं से ही अच्छे अंकों से सफलताएं प्राप्त करेंगे। इसी परिपेक्ष्य में आप स्नातक परीक्षा ससम्मान उत्तीर्ण करेंगे इससे आपके मन में आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी तथा उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में अग्रसर रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप किसी उच्च तकनीकी या व्यावसायिक पाठ्य क्रम में भी उच्चस्तरीय डिग्री अर्जित करने में समर्थ होंगे।

## प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। तथा केतु भी पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप तीक्ष्ण बुद्धि के स्वामी होंगे तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को बुद्धिमता से ही सम्पन्न करेंगे। आप में शीघ्र एवं सही निर्णय लेने की क्षमता भी विद्यमान होगी तथा इससे आपको समय समय पर वांछित लाभ एवं सफलता की प्राप्ति होती रहेगी। आप कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान भी अपनी बुद्धि से शीघ्र करने में समर्थ होंगे जिससे अन्य जन भी आपसे प्रभावित होंगे तथा वांछित सम्मान एवं आदर प्रदान करेंगे। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्म के प्रति आपकी कम ही रुचि होगी परन्तु आधुनिक विज्ञान साहित्य तथा पाश्चात्य भाषा के अध्ययन में आप विशेष रुचिशील होंगे तथा परिश्रम पूर्वक इनका ज्ञानार्जन करके एक विद्वान के रूप में स्वयं को समाज के सम्मुख स्थापित करने में समर्थ होंगे।

पंचमभाव में केतु की स्थिति के प्रभाव से प्रेम प्रसंगों में भी आपकी रुचि होगी तथा ऐसे सम्बन्धों में आपको मानसिक सन्तुष्टि की प्राप्ति होगी। प्रेम प्रसंगों में आप मर्यादा एवं नैतिकता का भी पालन करेंगे तथा यथार्थवादी दृष्टि कोण अपनाएंगे। यद्यपि आपका भावात्मक आकर्षण भी होगा लेकिन भावुकता के भाव में न्यूनता होगी तथापि आपका प्रेम-प्रसंग की परिणिति विवाह के रूप में भी हो सकती है जिससे आपका जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

केतु की संतति भाव में स्थिति के प्रभाव से संतति की प्राप्ति यथोचित समय पर होगी तथा पुत्र संतति की अधिकता रहेगी। आपकी संतति पराक्रमी, तेजस्वी एवं बुद्धिमान होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होगी। माता पिता के प्रति यद्यपि उनके मन में पूर्ण आदर एवं सम्मान का भाव होगा परन्तु स्वच्छन्द प्रवृत्ति होने के कारण यदा-कदा उनका कहना कम ही मानेंगे एवं महत्वपूर्ण कार्यों को करने में उनकी सलाह कम ही लेंगे। लेकिन इसकी आपको चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा उन्हें स्वतन्त्रता पूर्वक कार्यों को सम्पन्न करने देने चाहिए जिससे उनका आत्म विश्वास बना रहेगा तथा आपसी सम्बन्धों में भी सदभाव रहेगा। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में आपकी पूर्ण देख-भाल करेंगे लेकिन आपको भी वृद्धावस्था के लिए कुछ न कुछ धन संचित करके अवश्य रखना चाहिए जिससे अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों से सुरक्षित रहेंगे।

अध्ययन के क्षेत्र में आपकी संतति बुद्धिमान एवं योग्य सिद्ध होगी तथा प्रारम्भ से ही वे वांछित सफलताएं अर्जित करने में समर्थ होंगे। आप भी उनकी शिक्षा का उच्चस्तर पर प्रबन्ध करेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे। आपकी संतति योग्य गुणवान एवं व्यवहार कुशल होंगे तथा अपने उत्तम कार्य कलापों से अन्य जनों को प्रसन्न तथा प्रभावित करने में समर्थ होंगे। इससे आपके मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा बच्चों पर आपको गर्व होगा। अतः जीवन में आपका संतति सुख अच्छा रहेगा।

## परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है तथा सप्तम भाव को मंगल भी प्रभावित कर रहा है। सामान्यतया सप्तम भाव में मिथुन राशि की स्थिति से जातक का सहयोगी सुशील विनम्र कला प्रेमी तथा हास्य प्रवृत्ति का व्यक्ति होता है लेकिन मंगल के प्रभाव से वह तेजस्वी स्वाभिमानी पराक्रमी धनाढ्य एवं कार्यों को सम्पन्न करने में चतुर होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील एवं विनम्र स्वभाव की महिला होंगी परन्तु उनमें तेजस्विता का भाव भी विद्यमान होगा अपने कार्यों को सम्पन्न करने में वह चतुर होंगी तथा अपने साहसी एवं पराक्रमी कार्यों से अन्य जनों को भी प्रभावित करेंगी। उनकी प्रवृत्ति भी हास्य प्रिय होगी तथा अन्य जन भी उनकी हास्य प्रियता से प्रसन्न रहेंगे। सांसारिक कार्यों में भी वह दक्ष होंगी तथा कर्तव्य परायणता का भाव भी उनमें विद्यमान होगा।

आपकी पत्नी लालिमा लिए गौरवर्ण की सुंदर एवं आकर्षक महिला होंगी तथा उनका कद भी उन्नत होगा। शारीरिक संरचना उनकी पुष्ट रहेगी तथा अन्य अंग प्रत्यंग भी सुडौल रहेंगे जिससे उनके सौन्दर्य एवं आकर्षण में वृद्धि होगी शरीर में चुस्ती रखने के लिए वह व्यायाम या यौगिक क्रियाएं भी सम्पन्न करेंगी तथा आधुनिक सौन्दर्य प्रसाधनों का भी प्रयोग करेंगी। मिथुन राशि के प्रभाव से कला एवं संगीत के प्रति उनका आकर्षण रहेगा तथा कलात्मक वस्तुओं के संग्रह में प्रवृत्त होंगी।

सप्तम भाव में मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में विलम्ब होगा आपका विवाह किसी बंधु या संबन्धियों के सहयोग से सम्पन्न होगा। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा एक दूसरे के प्रति प्रेम एवं समर्पण की भावना होगी। अपने महत्वपूर्ण कार्य एवं योजनाओं को एक दूसरे की सलाह तथा सहमति से करेंगे इससे समानता एवं विश्वसनीयता बनी रहेगी। संयम से कार्य लेना चाहिए।

आपका विवाह किसी समृद्ध एवं प्रतिष्ठित परिवार में होगा तथा विवाह में आपको दहेज के रूप में पर्याप्त मात्रा में धन सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। विवाह के बाद सास ससुर से आपके संबंधों में मधुरता कम औपचारिकता अधिक होगी तथापि उनसे आपको नैतिक सहयोग मिलता रहेगा। आप भी अपनी ओर से उनसे सामान्य संबंध रखने के लिए यत्नशील रहेंगे।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी की सेवा की भावना कम ही होगी एवं सुख दुख में उनका यथोचित ध्यान नहीं रखेंगी तथा उनके तेजस्वी व्यवहार से भी वे अप्रसन्न होंगे देवर एवं ननद भी उनके व्यवहार से अप्रसन्न रहेंगे तथा उन्हें कम ही सहयोग तथा सम्मान प्रदान करेंगे।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में साझेदारी के लिए स्थिति अच्छी नहीं होगी एवं इससे लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। अतः साझेदारी की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

## व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। साथ ही बुध भी दशमभाव में ही स्थित है। कन्या राशि एवं बुध दोनों पृथ्वी तत्व प्रधान है अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र श्रमसाध्य होगा परन्तु बौद्धिक एवं मानसिक क्रियाओं की भी इसमें प्रबलता रहेगी आप स्वतंत्र कार्य या व्यवसाय के इच्छुक भी होंगे एवं परिश्रम पूर्वक कार्यक्षेत्र में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे।

दशमभाव में कन्याराशिस्थ बुध के प्रभाव से आप लिपिकीय कार्य, लेखक, कवि, चित्रकार, वास्तुकार, ज्योतिषी, जिल्दसाज, शिक्षक, पुस्तक लेखक, यंत्र निर्माण कर्ता, संशोधक, अनुवादक, वकील, दूतकार्य, टेलीफोन आपरेटर या दूरभाष विभाग तथा राजनीति में किसी उच्चाधिकार प्राप्त व्यक्ति के व्यक्तिगत सहायक के रूप में वांछित उन्नति सफलता एवं प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। साथ ही उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे तथा अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा अतः आपको उपरोक्त विभागों एवं क्षेत्रों में ही उज्ज्वल भविष्य के लिए अपनी आजीविका का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए एजेंसी दलाली पुस्तक विक्रय या प्रकाशन कार्य, अगरबत्ती पुष्पमालाएं, कागज के खिलौने कलात्मक वस्तुएं या वास्तुकला, वकालत, लेखाकार आदि के स्वतंत्र व्यवसाय एवं कार्यों से आप को इच्छित धन एवं लाभ की प्राप्ति होगी तथा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे अतः उपरोक्त क्षेत्रों में ही अपना कार्य या व्यापार प्रारंभ करें।

दशमभाव में स्वराशिस्थ ही बुध के प्रभाव से जीवन में आपको मान प्रतिष्ठा तथा सम्मान की प्राप्ति होगी तथा किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को अर्जित करने में भी समर्थ होंगे जिससे आपके समाज में प्रभाव में वृद्धि होगी एवं सभी लोग आपको वांछित सम्मान एवं आदर प्रदान करेंगे। आप किसी सामाजिक सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक संस्था में किसी सम्माननीय पदाधिकारी या सदस्य के रूप में मनोनीत होंगे जिससे आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इस प्रकार अपनी अर्जित उपलब्धियों से आप सन्तुष्ट रहेंगे।

आपके पिता बुद्धिमान शिक्षित एवं प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में सभी लोग उन्हें यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण अपनत्व एवं वात्सल्य का भाव होगा तथा आपकी उच्चशिक्षा के लिए सदैव तत्पर होंगे। आपके कार्यक्षेत्र में उन्नति एवं सफलता में उनका विशेष योगदान रहेगा तथा आप भी अपने परिश्रम ईमानदारी एवं योग्यता से पिता की प्रतिष्ठा में वृद्धि करेंगे। आपके परस्पर संबंधों में भी मधुरता होगी तथा सैद्धान्तिक एवं वैचारिक समानता बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को एक दूसरे की सलाह तथा सहयोग से सम्पन्न करेंगे।

## वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु तृतीय भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें द्वितीय भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु सप्तम भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें अष्टम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशि एवं नवम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

### व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्यतः अनुकूल रहेगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आप अपने व्यापार में कुछ अच्छा करेंगे। आपको कार्य क्षेत्र में मित्र, सहयोगी व जीवनसाथी का भी सहयोग प्राप्त होगा। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे।

02 जून के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। उस समय के अंतराल में आपके कार्य व्यवसाय में उतार चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। अतः कोई नया काम प्रारम्भ न करें पुराने चले आ रहे कार्य को और अच्छे ढंग से चलाएं। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके कार्य क्षेत्र में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती है। भूमि भवन से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को नुकसान भी हो सकता है।

### धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्धउत्तम रहेगा। एकादश स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके धनागम में निरन्तरता बना रहेगी। आप निष्ठा के साथ धनार्जन में लगे रहेंगेऔर आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने में जीवनसाथी एवं भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा।

गुरु के गोचर के बाद समय अच्छा नहीं रहेगा। गुरु एवं शनि दोनों ग्रहों का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके आय के मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। इस समय के अंतराल में आपको किसी को उधार पैसा नहीं देना चाहिए नहीं तो आपका पैसा डूब सकता है। निवेश के लिए ये समय उपयुक्त नहीं है। अतः इस वर्ष आप कोई निवेश न करें।

### घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके जीवनसाथी के साथ समन्ध मधुर होंगे। यदि आप अविवाहित हैं तो आपका विवाह हो सकता है। आपकी सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी।

02 जून के बाद समय अनुकूल नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान का शनि आपकी पारिवारिक अनुकूलता को भंग कर सकता है। परिवार में एक-दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव में कमी होगा। आपके माता पिता कास्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।

## संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। आप के बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। वह अपने भाग्य के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी अच्छा है। यदि आपकी दूसरा संतान विवाह के योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है।

02 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं रहेगा। आपके बच्चों का स्वास्थ्य अनुकूल नहीं होने के कारण उनकी शिक्षा-दिक्षा भी प्रभावित हो सकती है। उनको सफलता प्राप्त के लिए लगातार कठिन परिश्रम करने की आवश्यकता है परन्तु 31 अक्टूबर के बाद समय काफी अच्छा हो जाएगा।

## स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। आपके मन में सकारात्मक विचार आएं। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी अच्छी रहेगी। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे जिससे आप का स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

02 जून के बाद स्वास्थ्य के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा। मौसमजनित बीमारियों से प्रभावित हो सकते हैं। अष्टमस्थ गुरुजल तत्व राशि में होने कारण कफ, पाचनतन्त्र व पेट संबंधित बीमारियों से परेशान कर सकते हैं परन्तु 31 अक्टूबर के बाद आप के स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा।

## करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। सफलता प्राप्त के लिए लगातार परिश्रम करने की आवश्यकता है। विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। व्यवसायिक शिक्षा व तकनीकी शिक्षा के लिए समय अच्छा है।

02 जून के बाद समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। उस समय आपकी उच्च शिक्षा में भी रुकावटें आ सकती हैं। बेरोजगार जातकों को अभी कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

## यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। तृतीय स्थान के राहु छोटी-मोटी यात्राओं के साथ साथ लम्बी यात्रा भी कराते रहेंगे।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अपने स्थान से दूर स्थानान्तरण हो सकता है। यह स्थानान्तरण मनोनुकूल स्थान पर नहीं होगा। 02 जून के बाद द्वादश स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा करेंगे।

## धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। आप अपने जीवनसाथी के साथ मिलकर हवनादि कार्य संपन्न करेंगे। तीर्थ यात्रा कर पुण्यार्जन भी करेंगे। 02जूनके बाद अधिक व्यस्तता के कारण आप पूजा-पाठ व धार्मिक कार्य कम ही कर पाएँगे।

- सूर्य नमस्कार करें एवं सूर्य को जल चढ़ाएं।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें अथवा लोहे का तवा दान करें।
- गुरुवार के दिन केला या बेसन के लड्डू गरीबों में बांटे और वीरवार का व्रत करें।



## वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं चतुर्थ भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष द्वितीय भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं नवम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं दशम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

### व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। अष्टम स्थान केगुरु आपके व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे। किसी पर अधिक विश्वास करना आप के लिए लाभ प्रद नहीं रहेगा। आपके कार्य क्षेत्र में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें।

जून के बाद शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल हो रहा है। जिसके प्रभाव से आपको कार्य व्यवसाय में उन्नति मिलना शुरू हो जाएगी। इस समय आप कोई नया कार्य भी प्रारम्भ कर सकते हैं, जिसमें आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आप भाग्य की अनुकूलता के कारण उन्नति करेंगे। 3 अक्टूबर के बाद शनि ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल हो रहा है। उस समय कोई भी निर्णय बहुत सोच विचार कर लेना चाहिए। 26 नवम्बर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी। प्रोपर्टी से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को हानि हो सकती है।

### धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्षका पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान का राहु आपके संचित धन में कमी ला सकते हैं। आय के सारे मार्ग भी प्रभावित हो सकते हैं। कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। आपको चोरी आदि से धन हानि भी हो सकती है। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। रोग दूर करने में भी पैसा खर्च हो सकता है।

जून के बाद आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरू हो जाएगा। सट्टा, ग्रेच्युटी या लॉटरी के माध्यम से भी आपको लाभ प्राप्त हो सकता है। शेयर बाजार से जुड़े व्यक्तियोंको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आप अपने बच्चे की उच्च शिक्षा पर भी धन खर्च कर सकते हैं। 26 नवम्बर के बाद चतुर्थ स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से भूमि, भवन एवं वाहन के साथ रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की भी प्राप्ति हो सकती है। परिवार या संबंधियों के मांगलिक कार्य व बच्चे की उच्च शिक्षा पर भी आप अधिक खर्च करेंगे।

## घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का पूर्वाब्द अनुकूल नहीं रहेगा। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पाप ग्रह से प्रभावित होने के कारण आपका घरेलू वातावरण अनुकूल नहीं रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना व समर्पण में कमी आएगी। परिवार में स्वार्थ की भावना उत्पन्न होगी और इसी स्वार्थ के कारण पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है। आपकी माता का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है। द्वितीयस्थ राहु के प्रभाव से आपके अंदर वाणी दोष उत्पन्न हो सकता है अतः अच्छा होगा कि इस समय के अंतराल में आपको अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखना होगा।

जून के बाद पारिवारिक वातावरण अनुकूल होना शुरू हो जाएगा। तृतीय स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। आपको छोटे भाई बहनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपके पराक्रम में वृद्धि होगी।

## संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वाब्द अनुकूल नहीं रहेगा। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से संतान संबंधित परेशानी बनी रहेंगी। आपके बच्चों की उन्नति में भी व्यवधान आ सकता है, जिससे वे अपने लक्ष्य तक पहुंचने में कठिनाईयों का सामना करेंगे। नवविवाहित व्यक्तियों को संतानोत्पत्ति में विलम्ब हो सकता है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय गर्भाधान के लिए बहुत अच्छा योग बन रहा है। आपके बच्चों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी और शिक्षा के क्षेत्र में कुछ विशेष करेंगे। संतान के लिए विवाह का प्रबल योग बन रहा है। यदि वह विवाह के योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

## स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वाब्द अनुकूल नहीं रहेगा। अष्टमस्थ गुरुके कारण आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव बना रहेगा। मौसमजनित बीमारियों से थोड़ी परेशानी हो सकती है। अपने खान-पान के साथ साथ अपनी दिनचर्या को व्यवस्थित रखें। सुबह सुबह व्यायाम के साथ योगाभ्यास भी करना चाहिए। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली बेहतर बनाने की कोशिश करें। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी पारिवारिक परेशानी के कारण दिमागी तनाव न पालें।

जून के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी। उस समय आपके स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह के प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। धार्मिक कृत्यों में रुचि बढ़ेगी जिससे आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

## करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर में सफलता प्राप्त के लिए आप को अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। जो विद्यार्थी विदेश जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है। विद्यार्थियों में पढ़ाई के प्रति रुचि बनी रहेगी, साथ ही आलस्य का त्याग करें।

जून से गुरु एवं शनि का गोचर अनुकूल होने के कारण जो व्यक्ति इलेक्ट्रॉनिक या हार्डवेयर से संबंधित शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो उसके लिए समय काफी अच्छा है। तकनीकी शिक्षा या उच्च शिक्षा में भी आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। जिन जातकों की अभी तक नौकरी नहीं लगी है उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

## यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा हो सकती है। चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से घर से दूर की यात्रा हो सकती है। नौकरी करने वालों का स्थानान्तरण भी हो सकता है।

26 जून के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी धार्मिक यात्राएं भी हो सकती हैं।

## धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत अच्छा नहीं रहेगा। मानसिक अस्थिरता के कारण पूजा-पाठ में मन कम ही लगेगा। एकाग्रता नहीं रहने के कारण ध्यान, मन्त्र पाठ इत्यादि क्रियाएं नहीं कर पाएंगे। जून के बाद आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। पंचमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप किसी को गुरु भी बना सकते हैं। उनसे गुरु मन्त्र लेकर उसकी साधना भी कर सकते हैं।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पिली वस्तु का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।
- बुधवार या शनिवार को चिड़ियों को दाना डालें।

## वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु दशम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

### व्यवसाय

वर्षारम्भ में दशमस्थ गुरु पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। 28 फरवरी से भाग्य आपके अनुकूल हो रहा है। कार्य व्यवसाय में सफलता मिलेगी। वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। द्वितीयस्थ राहु का नकारात्मक प्रभाव आपके व्यवसाय पर पड़ेगा।

24 मई को राहु ग्रह का गोचर लग्न स्थान में हो रहा है। मानसिक अशान्ति एवं शारीरिक आलस्यता के कारण आपके कार्यों में कुछ व्यवधान आएंगे। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो साझेदार के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में आपको विवेक से काम लेना चाहिए।

### धन संपत्ति

व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी परन्तु आप इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे। आप अपनी भौतिक सुख सुविधा पर भी अधिक खर्च करेंगे। चतुर्थस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन एवं वाहन इत्यादि का भी सुख प्राप्त होगा।

फरवरी के बाद पिता से लाभ मिलेगा। बच्चों की उच्च शिक्षा पर भी व्यय करेंगे। लग्नस्थ राहु के प्रभाव से शारीरिक व्याधी दूर करने में भी आपके पैसे खर्च होंगे। 24 जुलाई से द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। घर परिवार में मांगलिक कार्य होंगे।

### घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से अच्छा नहीं है। चतुर्थ एवं द्वितीय स्थान पीड़ित होने के कारण घरेलू वातावरण अशान्त बना रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद होते रहेंगे। 23 फरवरी के बाद संतान संबंधित परेशानी हो सकती है। परिवार के कुछ लोगों का बर्ताव अच्छा नहीं रहेगा। ऐसे में विपरीत परिस्थितियों से निपटने के लिए आपको अपने अन्दर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करनी होगी। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से समाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

24 जुलाई से चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप के परिवार में परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक प्रेम में वृद्धि होगी। परिवार के सभी सदस्यों का सहयोग प्राप्त होगा। माता पिता के लिए यह समय अच्छा रहेगा। मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध मधुर होंगे।

### संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा परन्तु फरवरी के बाद बहुत बढ़िया हो रहा है। शिक्षा-दीक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो सकता है। आपकी दूसरी संतान के लिए समय सामान्य रहेगा। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी।

24 जुलाई के बाद सफलता प्राप्ति लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता होगी। आप अपनी मेहनत के बल पर ही लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

### स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बढ़िया रहेगा परन्तु किंचित मानसिक परेशानी बनी रहेगी। 28 फरवरी के बाद गुरु की दृष्टि लग्न पर होगी जिसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि के संकेत हैं।

24 मई को राहु ग्रह का गोचर लग्न स्थान पर हो रहा है। उस समय स्वस्थ रहते हुए भी बीमारी जैसा अनुभव होता रहेगा। आलस्य की भावना बनी रहेगी। सुबह सूर्योदय के पहले उठकर व्यायाम करना आपके स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद रहेगा।

### करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा, परन्तु फरवरी के बाद समय उत्तम हो रहा है। व्यावसायिक शिक्षा के लिए समय बहुत बढ़िया चल रहा है। विद्यार्थियों को करियर में सफलता मिलेगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा।

24 जुलाई के बाद प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी करने वाले व्यक्तियों को सफलता प्राप्त होगी और अपने शत्रुओं पीछे छोड़कर आगे बढ़ेंगे

### यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। फरवरी के बाद छोटी-मोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। ये यात्राएं आपके लिए अनुकूल या उन्नतिकारक भी सिद्ध हो सकती हैं। इन यात्राओं के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

24 जुलाई के बाद आप पूरे परिवार के साथ किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे।

अपने जन्म स्थल से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्मभूमि की यात्रा होगी।

### धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

28 फरवरी से पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप योग, ध्यान एवं साधना अधिक करेंगे।

- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं राहु के मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन सुबह स्नानादि से निवृत्त होकर सूर्य को जल दें।
- गणेशजी के मन्त्र का पाठ करें एवं नित्य प्राणायाम करें।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।



## वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि पंचम भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु लग्न भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु एकादश भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गशी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

### व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यापारिक सफलता के लिए श्रेष्ठ रहेगा। आय के सारे मार्ग खुलेंगे। आपके कार्य व्यवसाय में चौमुखी विकास होगा। कोई नया कार्य भी प्रारम्भ करेंगे जिसमें आपको अत्यधिक लाभ होगा। वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। व्यवसाय को एक नया मोड़ मिलेगा। 29 मार्च के बाद द्वादशस्थ गुरु के कारण आपके कुछ विरोधी उत्पन्न हो सकते हैं परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उन पर भी विजय प्राप्त कर सकते हैं।

25 अगस्त से गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल हो रहा है जिसके फलस्वरूप आप अपने व्यवसाय में उन्नति करेंगे। आपको कर्मचारियों का पूरा सहयोग मिलेगा। इस सफलता के पीछे आपके भाईयों का सहयोग होगा। व्यापार का स्तर बढ़ाने के लिए अपना संचित धन भी खर्च कर सकते हैं। नौकरी करने वालों के लिए भी यह वर्ष अनुकूल रहेगा। अधिकारियों का सहयोग मिलता रहेगा।

### धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। निष्ठा के साथ प्रयास करते हैं तो आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। धनागम के योग प्रबल होंगे तथा आय के नये साधन मिलेंगे।

25 अगस्त के बाद आपका रुका हुआ धन मिल सकता है। मातुल पक्ष के लोगों से भी लाभ होगा। लग्न स्थान के राहु शारीरिक व्याधि दूर करने में पैसा खर्च करा सकते हैं परन्तु सामान्य काम-काज पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। छठे स्थान का शनि शत्रुओं से भी लाभ करा सकता है।

### घर-परिवार, समाज

घर परिवार में शान्ति का वातावरण बना रहेगा। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि अविवाहित व्यक्तियों का विवाह भी करा सकती है। विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है जिससे परिवार में खुशहाली का माहौल बनेगा। भाई-बहन सहित पूरे परिवार का सहयोग मिलता रहेगा। समाज में आपकी पद-प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। मार्च के बाद संतान

को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

लग्न स्थान के राहु आपका स्वास्थ्य व पारिवारिक अनुकूलता प्रभावित कर सकते हैं। 25 अगस्त के बाद अपने बौद्धिक बल द्वारा आप अपने घरेलू वातावरण को अनुकूल बना लेंगे। अष्टम स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं।

### संतान

वर्षारम्भ में पंचमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि से संतान के लिए उत्तम योग बन रहे हैं। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। गर्भाधान के लिए उत्तम समय है। यदि सन्तान विवाह योग्य है, तो उसका विवाह भी हो सकता है। 29 मार्च के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है।

25 अगस्त से समय फिर से अच्छा हो रहा है। आप सन्तान की शिक्षा में सुधार होगा और उनको उन्नति के अवसर भी मिलेंगे। 05 अक्टूबर के बाद समय और भी शुभ है।

### स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए सामान्य रहेगा। लग्नस्थ राहु के प्रभाव से बीमारी नहीं रहने के बावजूद भी बीमारी जैसा अनुभव होगा। गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने के फलस्वरूप स्वास्थ्य श्रेष्ठ व मन में प्रसन्नता बनी रहेगी।

29 मार्च के बाद द्वादशस्थ गुरु के कारण छोटी-मोटी बीमारियों से परेशानी हो सकती है परन्तु 25 अगस्त से गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल होने के कारण समय बहुत अच्छा हो रहा है।

### करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में आप कुछ विशेष करेंगे। सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप कोई व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं तथा शीघ्र ही अपने लिए आय के नवीन स्रोतों का भी सृजन करेंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय कुछ प्रभावित होगा।

25 अगस्त के बाद आपको प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिलने के प्रबल योग बन रहे हैं। सभी बेरोजगारों को नौकरी मिल सकती है। सरकारी अफसरों या वरिष्ठ लोगों का भरपूर सहयोग मिलेगा।

### यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में आपकी छोटी-छोटी यात्राएं होती रहेंगी। सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी व्यवसायिक यात्रा भी होंगी।

29 मार्च के बाद आपकी विदेश यात्रा भी होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा

लाभ मिलेगा ।

### धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा । आपके अंदर ईश्वर के प्रति अटूट विश्वास बढ़ेगा । आप अपनी पारिवारिक सुख शान्ति के लिए कोई विशेष पूजा का आयोजन करेंगे जिसमें आपके परिवार वालों का पूर्ण सहयोग होगा ।

- वीरवार के दिन पीली वस्तु का दान करें । गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें ।
- अपने माता पिता की सेवा करें ।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच या दुर्गा चालीसा का पाठ करें ।



## वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि पंचम भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु लग्न स्थान में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं एकादश भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

### व्यवसाय

यह साल आपके लिए कई लाभकारी अवसर लेकर आ रहा है। आप अपने व्यावसायिक जीवन में अपने सहयोगियों के साथ अपने अधिकारियों को भी प्रभावित करेंगे। साल की शुरुआत में आपके कार्यों में देरी हो सकती है जिसके चलते तनावपूर्ण स्थिति बन सकती है।

आप अपने लक्ष्य को योजनानुसार प्राप्त कर सकेंगे। शनि का गोचर आपके समक्ष कुछ चुनौतियां खड़ी करेगा। आपको अपने भविष्य को ध्यान में रखते हुए अपनी योजना निर्धारित करनी होगी और इस ओर ध्यान देना होगा। जो व्यक्ति रोजगार की तलाश में हैं उन्हें अड़चनों के बावजूद सफलता प्राप्त होगी।

### धन संपत्ति

आर्थिक तौर से यह साल आपके लिए कई लाभकारी अवसर लेकर आने वाला है। आपको पहले महीने में प्रतीत नहीं होगा क्योंकि इस दौरान राहु ग्रह का गोचर अच्छा नहीं है। आपको आर्थिक हानि का सामना करना पड़ सकता है। आपको इस दौरान यही सलाह दी जाती है कि इस समय अपनी वित्तीय योजनाओं को निर्धारित कर आगामी समय के लिए खुद को तैयार रखें। अप्रैल के बाद समय आपके लिए बहुत ही अनुकूल हो रहा है। आप बड़े काम करने में सफल होंगे।

23 सितम्बर के बाद गुरु का गोचर फिर से प्रभावित हो रहा है। उस समय कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अतः पहले से ही कुछ अतिरिक्त धन का संचय करें। आपकी धर्मपत्नी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है जिसमें भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

### घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। आपके दाम्पत्य जीवन में सामान्य उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। पंचम भाव का शनि संतान सुख में कमी कर सकता है। ऐसे में अपने बच्चों के साथ मधुर संबंध बनाना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 17 अप्रैल के बाद षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध मधुर होंगे।

आपको बड़े भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा।

गुरु के गोचर के बाद आपके घरेलू वातावरण में अनुकूलता आएगी। परिवार के सभी लोगों का सहयोग मिलेगा। परिवार में सुख-शान्ति का वातावरण बनेगा। तृतीय स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से सामाजिक पद व प्रतिष्ठि में भी वृद्धि होगी।

### संतान

वर्ष के प्रारम्भ में संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। पंचमस्थ शनि आपके बच्चे के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है जिससे उसकी शिक्षा व उन्नति में रुकावटें आ सकती हैं। इस समयान्तराल में गर्भवती स्त्रियों को बहुत सावधान रहना चाहिए।

मई के बाद अचानक आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार होगा और उनकी उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। यदि आपकी संतान विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

### स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। लग्नस्थ राहु के प्रभाव से स्वास्थ्य संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे। इस समय के अंतराल में दवा से अधिक दुआ आपके लिए लाभप्रद रहेगी। 17 अप्रैल के बाद षष्ठस्थ शनि ग्रह के फलस्वरूप आपका स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरू हो जाएगा। अच्छे स्वास्थ्य लिए खान-पान एवं दिनचर्या भी सही रखेंगे जिससे आपके स्वास्थ्य में अनुकूलता बनी रहेगी।

23 सितम्बर के बाद द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीवर जनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा। सुबह-सुबह व्यायाम करना या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा नहीं तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

### करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ प्रतियोगिता परीक्षा के लिए अच्छा नहीं रहेगा। आलस्य की भावना आपकी उच्च शिक्षा में व्यवधान डाल सकती है। व्यावसायिक व्यक्तियों का समय सामान्य रहेगा। विदेशी भाषा सीखने के लिए यह समय बहुत अच्छा है।

शनि एवं गुरु के गोचर के बाद समय काफी उत्तम हो जाएगा। आप सारे शत्रुओं को परास्त कर अपने करियर में आगे रहेंगे। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे। बेरोजगार लोगों को इच्छित नौकरी मिल सकती है।

### यात्रा-तबादला

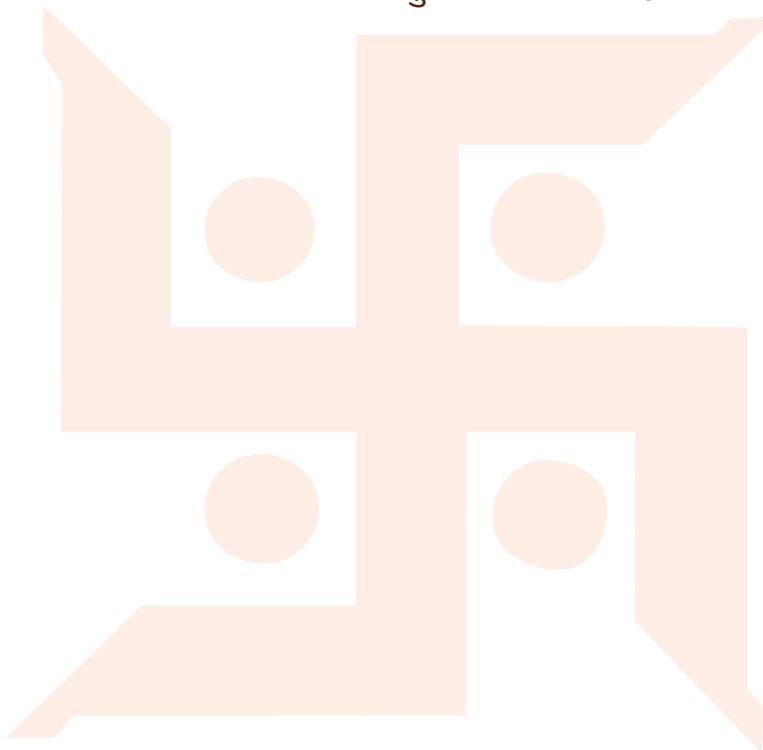
वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होंगी। छोटी यात्राएं तो होती रहेंगी। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए अच्छा योग बन रहा है।

मई के बाद आप ज्यादातर यात्रा पर ही रहेंगे दूर की यात्राएं अधिक होंगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है। इन सब यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

### धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप दान-पुण्य करेंगे। 1 मई से आपकी अपने इष्टदेव में भक्ति और प्रगाढ़ होगी। आप अपनी धर्मपत्नी के साथ घरेलू सुख-शान्ति के लिए कोई विशेष पूजा पाठ संपन्न करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पुजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें और काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।



## दशा विश्लेषण

महादशा :- राहु  
( 22/09/2024 - 23/09/2042 )

राहु की महादशा 22/09/2024 को आरम्भ और 23/09/2042 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष। आपकी जन्मकण्डली में राहु ग्यारहवें भाव में स्थित है। राहु की दृष्टि पंचम भाव पर है। इसके पूर्व आपकी सात वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपके जीवनचर्या में उन्नति, भाई-बहनों तथा सम्बन्धियों से लाभ, छोटी यात्रा तथा शक्ति में वृद्धि होगी। राहु की इस दशा के दौरान आपको आर्थिक समृद्धि की प्राप्ति, हर प्रकार का लाभ तथा इच्छाओं की पूर्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप सुखी तथा आशावादी होंगे। राहु के कारण आपको हर तरह की भोजन के मामले में हर तरह की अतिशयता से बचना चाहिए। गरिष्ठ भोजन से बचें। मौसम में परिवर्तन के कारण पाचन क्रिया में गड़बड़ी, चर्मरोग, पित्त से सम्बन्धित रोग, बुखार, कान तथा निचली भुजा में कष्ट हो सकता है। सावधानी बरतने से इनमें से अधिकांश बीमारियों से बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपका आर्थिक स्थिति अत्यन्त मजबूत होगी। आपके पास धन होगा, आर्थिक लाभ के अवसर मिलेंगे और निवेश तथा सद्दा लाभदायक होगा। इस अवधि में आपको सम्पत्ति, समृद्धि तथा अचानक लाभ मिलेगा। आपकी अनेक इच्छाएं आकांक्षाएं पूरी हो सकती हैं। जीविका तथा व्यवसाय के लिए विधि, दवा, लेखा, कम्प्यूटर, खेल, पराविज्ञान तथा जलसेवा के क्षेत्र का चयन कर सकते हैं। दवा, रसायन, एण्टीबायोटिक दवाओं, चमड़े के सामान, लोहा और इस्पात आदि का व्यापार लाभदायक होगा। सेवारत लोगों को विरोधियों पर विजय, कार्यस्थान में अनुकूल स्थिति, लाभ और सम्मान की प्राप्ति होगी। आपके सहकर्मी तथा अधीनस्थ कर्मचारी आपके सहयोगी होंगे। आपका स्थानान्तरण या परिवर्तन हो सकता है। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को सम्पत्ति की प्राप्ति, लाभ में वृद्धि, व्यापार में विस्तार तथा हर प्रकार का लाभ मिलेगा। आर्थिक समृद्धि तथा महत्वाकांक्षा की पूर्ति और लक्ष्य की प्राप्ति के लिए यह दशा अति उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

शुक्र की अन्तर्दशा में आपको जीवन का हर सुख मिलेगा। आवास में परिवर्तन सम्भव है। जमीन-जायदाद के मामलों में हानि कम करने के लिए सावधानी बरतना चाहिए। आप वाहन खरीद सकते हैं। मंगल की अन्तर्दशा में आपकी छोटी किन्तु लाभदायक यात्रा होगी। शुक्र तथा शनि की अन्तर्दशा में दूर की यात्रा हो सकती है।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप अपने महत्वाकांक्षा की पूर्ति

करेंगे। आप सभी परीक्षाओं और प्रतिस्पर्धाओं में सफल होंगे। अर्थशास्त्र, दवा, प्रबन्धन, इंजीनियरिंग तथा विधि के विषयों में आपकी रुचि हो सकती है। आप पराविज्ञान, खेल, दर्शनशास्त्र आदि में रुचि रखते हैं और शिक्षा से अलग गतिविधियों में आगे बढ़ेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपके बच्चे आपकी खुशी के साधन होंगे। आपके जीवनसाथी को सुख, निवेश तथा सट्टे में सफलता, समृद्धि तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपके जीवन साथी से आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपकी माता को अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। उनकी अचानक छोटी यात्रा और सम्पत्ति की प्राप्ति होगी जबकि आपके पिता को संबंधियों से लाभ मिलेगा और यात्रा होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को समृद्धि मिलेगी जबकि बड़े भाई-बहनों को यश, ख्याति, सम्पत्ति, शक्ति तथा अधिकार मिलेगा। आपका उनके साथ सम्बन्ध मधुर रहेगा।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के कारण आपको सम्पत्ति-समृद्धि की प्राप्ति और इच्छाओं की पूर्ति होगी। गुरु की अन्तर्दशा में आपको हर प्रकार का लाभ और प्रतिष्ठा मिलेगी। शनि की अन्तर्दशा के दौरान यश और ख्यति मिलेगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और उन्नति होगी। बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप शिक्षा उत्तम होगा और सट्टे में लाभ होगा। केतु की अन्तर्दशा के कारण कुछ समस्या हो सकती है। शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति तथा यात्रा होगी। सूर्य की अन्तर्दशा के फलस्वरूप शादी, साझेदारों से लाभ तथा यात्रा होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के दौरान कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्या हो सकती है, जबकि मंगल की अन्तर्दशा में यात्रा, संबंधियों से सहायता तथा जीविकोपार्जन में उन्नति होगी।

**अंतर्दशा :- राहु - राहु  
( 22/09/2024 - 05/06/2027 )**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 22/09/2024 को प्रारंभ होकर 23/09/2042 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास 12 दिन होगी जो आपके लिए 22/09/2024 को प्रारंभ होकर 05/06/2027 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। राहु छायाग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती। स्थिति के अनुसार यह शुभ या अशुभ हो सकता है। एकादश भाव में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के पंचम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप धनी और प्रसिद्ध बनेंगे। गरीबवर्ग के लोगों के नेता बन सकते हैं। विदेश जा सकते हैं। कान के रोगों से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए राहु गायत्री मंत्र के 18000 जाप करें।

**अंतर्दशा :- राहु - गुरु  
( 05/06/2027 - 29/10/2029 )**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 22/09/2024 को प्रारंभ होकर 23/09/2042 को समाप्त होगी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 4 मास 24 दिन रहेगी जो आपके लिए 05/06/2027 को प्रारंभ होकर 29/10/2029 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। बृहस्पति शुभ ग्रह है। एकादश भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 3, 5, 7 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप साहसी, ज्ञानवान, धनी और बुद्धिमान बनेंगे। पर्याप्त संख्या में उत्तम मित्र होंगे। जरूरतमंदों की मदद करेंगे। इस अवधि में विकसित गुणों का समुचित उपयोग भविष्य तक लाभकारी रहेगा।

शुभत्व में वृद्धि के लिए विशेषतया बृहस्पतिवार, या सप्ताह में किसी भी दिन बृहस्पति के मंत्र का जप करते हुए पीपल की जड़ में जल अर्पित करें।

**अंतर्दशा :- राहु - शनि  
( 29/10/2029 - 04/09/2032 )**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है जो आपके लिए 22/09/2024 को प्रारंभ होकर 23/09/2042 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 10 मास 6 दिन होगी जो आपके लिए 29/10/2029 को प्रारंभ होकर 04/09/2032 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है। शनि शक्तिशाली ग्रह है। तृतीय भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 5, 9, 12 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में उच्चाधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे। आप नगरपालिका, पंचायत आदि के अध्यक्ष बन सकते हैं। बहुत लोगों की मदद करेंगे। सफलता बाधाओं को पार करने के बाद ही मिलेगी। आर्थिक स्थिति मजबूत बनेगी।

अगर नौकरी में हैं तो प्रोन्नति हो सकती है, भाइयों से विवाद हो सकता है। मन में निराशा की भावना रह सकती है जो समय गुजरने पर ठीक हो जाएगी।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए नीलम चांदी या सोने की अंगूठी में जड़वाकर शनिवार के दिन पूजा के बाद दायें हाथ की मध्यमा अंगुली में, अंगूठी को कच्चे दूध और गंगाजल में धोकर, शनि के वैदिक मंत्र का उच्चारण करते हुए धारण करें।